Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

> ज्यूं अधर्म रा कामा धर्म मांहे घाल्या,
> धर्म रा कामा अधर्म में घाल्या।
> दोनूंई विध कर्म बांधे अग्यांनी,
> दुरगत मांहे चाल्या।।
>
> अज्ञानी लोग अधर्म के कार्य को धर्म में और धर्म के कार्य को अधर्म में डाल देते हैं। वे दोनों ओर से बंध जाते हैं, उनकी दुर्गति होती है।
>
> – आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली ● वर्ष 26 ● अंक 27 ● 07 अप्रैल - 13 अप्रैल, 2025 प्रत्येक सोमवार ● प्रकाशन तिथि : 05-04-2025 ● पेज 16 ₹ 10 रुपये

अभय के प्रयोग से हो सकता है अहिंसा का अनुपालन : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02

योजना निर्माण के लिए समय का अवबोध है महत्वपूर्ण : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 15

Address Here

समस्त कच्छ जैन समाज ने युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी को "सवाया कच्छी पूज" अलंकरण से किया विभूषित

रापर।
28 मार्च, 2025

दो दिवसीय प्रवास पर रापर पधारे श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्म संघ के वर्तमान अधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी का स्वागत समारोह श्री वर्धमान जैन श्रावक संघ आराधना भवन परिसर स्थित वर्धमान समवसरण में आयोजित किया गया।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण के स्वागत समारोह में पूर्व विधायक पंकजभाई मेहता ने अपने विचार रखते हुए कहा - "भुज मर्यादा महोत्सव के अवसर पर कच्छी पूज समवसरण में आचार्य प्रवर ने पूज्य डालगणी के कच्छ प्रवास की जानकारी दी थी। कच्छ में अमूर्तिपूजक परंपरा के जितने भी जैन संप्रदाय हैं, उनके आचार्य भी कच्छ के ही हुए हैं। आप तो राजस्थान से हैं फिर भी दूसरी बार कच्छ का दौरा कर आपने हम पर बड़ी कृपा की है। कच्छ की 10 में 7 तहसील और 6 में से 5 विधानसभा क्षेत्र का आपने स्पर्श किया। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी कहते हैं मुझे बार-बार कच्छ में आने का मन होता है। हम उनको 'सवाया कच्छी' के रूप में पुकारते हैं। हम कच्छवासी सौभाग्यशाली हैं आपका यहाँ दो बार पधारना हुआ। संपूर्ण कच्छ क्षेत्र को आचार्यश्री का आशीर्वाद प्राप्त है, आचार्य श्री ने सवाया काम किया है, इसलिए आज से हम कच्छ के पूरे जैन समाज की ओर से आपको 'सवाया कच्छी पूज' के रूप में अलंकृत करने की घोषणा करते हैं।"

(शेष पेज 14 पर)

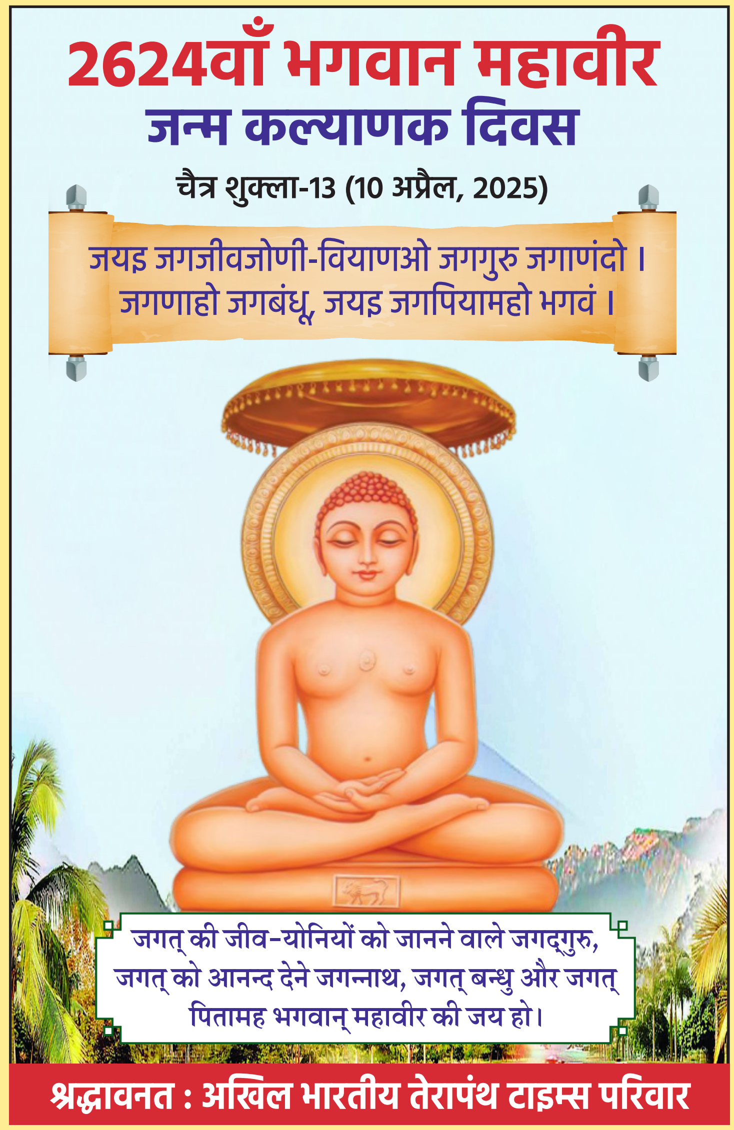

विक्रम संवत् 2082 के शुभारंभ पर अध्यात्म एवं मैनेजमेंट गुरु ने दी सफलता के लिए समय नियोजन की प्रेरणा

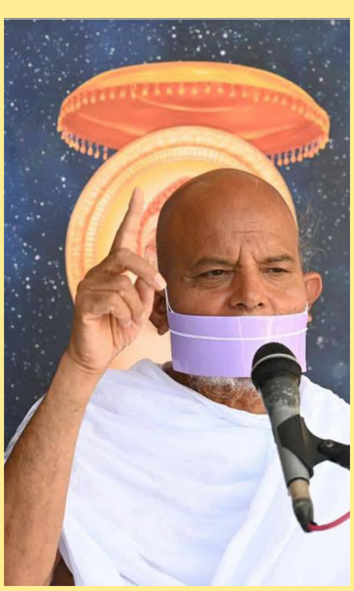

फतेहगढ़।
30 मार्च, 2025

तेरापंथ के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने विक्रम संवत् 2082 के प्रथम दिन सम्पूर्ण समाज को वृहद मंगलपाठ की कृपा कराकर आशीर्वाद प्रदान किया। नववर्ष के शुभ अवसर पर पूज्यवर अपनी धवल सेना के साथ सेलारी गांव से लगभग 15 किलोमीटर का विहार कर फतेहगढ़ स्थित सरकारी उच्चतर माध्यमिक शाला में पधारे। बारह वर्ष पूर्व भी आचार्य प्रवर यहां पधारे थे। यह वही फतेहगढ़ है जहां आचार्य श्री डालगणी का मुनि अवस्था में चातुर्मास हुआ था।

पूज्य डालगणी के अनंतर पट्टधर आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया – 'शास्त्रों में कहा गया है कि जो रात्रि बीत जाती है, वह लौटकर नहीं आती। धर्म करने वाले की रात्रियाँ सफल होती हैं जबकि अधर्म में लिप्त व्यक्ति की रात्रियाँ निष्फल हो जाती हैं।'

रात्रि को समय का प्रतीक मानना चाहिए, क्योंकि वह वापिस नहीं आती। जो कार्य आज करना है, उसे आज ही कर लें। समय का उत्तम उपयोग करना चाहिए। विक्रम संवत् 2081 बीत गया, और अब 2082 आरंभ हो गया है। हमारे यहां प्राचीन काल में नववर्ष सावन मास से प्रारंभ होता था, परंतु गुरुदेव तुलसी के समय से यह परंपरा चैत्र शुक्ला एकम से शुरू हुई।

मनुष्य यदि समय का सही उपयोग करे तो वह किसी भी कार्य को सफलतापूर्वक कर सकता है। किसी भी कार्य के लिए उचित काल और क्षेत्र आवश्यक होते हैं। (शेष पेज 2 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
07 अप्रैल - 13 अप्रैल, 2025
है प्रभो! यह तेरापंथ

अनिश्चित आयुष्य होने पर भी निश्चिंतता किस बात की? आचार्यश्री महाश्रमण

रापर।
27 मार्च, 2025

संयम के सुमेरू आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ रापर पधारे। पावन प्रेरणा प्रदान कराते हुए परम पूज्य ने फरमाया कि शास्त्राकार ने मानो एक सुन्दर सन्देश दिया है कि आयुष्य सीमित है तो तुम किस चीज को सामने रखकर, किस कारण को सामने रखकर अपने योगक्षेम की ओर ध्यान नहीं दे रहे हो?

हर प्राणी का आयुष्य एक दिन समाप्त होता है। तीर्थंकर और चक्रवर्ती जैसे उत्तम पुरूष का आयुष्य भी एक दिन समाप्त होता है। भगवान महावीर तो जीवन के आठवें दशक के पूर्वाद्ध में ही निर्वाण को प्राप्त हो गये थे। वर्तमान में तो 90-100 की आयु वाले मिलते हैं पर जैसे-जैसे काल बढ़ रहा है मनुष्य की आयु 16-20 वर्ष की हो जायेगी। सीमित आयुष्य होते हुए भी व्यक्ति निश्चिंत बैठा है, अपने बारे में सोचता नहीं है।

अगले जन्म पर भी हमारा ध्यान जाना चाहिये, अपने योगक्षेम पर ध्यान देना चाहिये। आत्मा का सम्बन्ध पुनर्जन्म से जुड़ा हुआ है। आत्मा 84 लाख जीवन योनियों में भ्रमण करती है। कई जीव तो अव्यवहार राशि-वनस्पतिकाय में निरन्तर जन्म-मरण करते रहते हैं। जब कोई जीव मोक्ष में जाता है तो अव्यवहार राशि से जीव व्यवहार राशि में आता है। जब तक मोक्षावस्था नहीं मिलेगी जन्म-मरण होता रहेगा।

कषाय है, मोहनीय कर्म है तो पुनर्जन्म होता रहेगा। कषाय और मोहनीय कर्म क्षय को प्राप्त हो गये तो फिर अगला जन्म नहीं होगा। जैन ग्रन्थों में तो पुनर्जन्म की कितनी बातें हमें प्राप्त होती है। व्यक्ति सोचता है कि संसार के काम-भोग तो हाथ में आये हुए हैं। कौन जानता है कि परलोक है या नहीं फिर प्राप्त सुखों को क्यूं छोड़ूं। नास्तिक विचारधारा वाला तो पुनर्जन्म व परलोक को मानता ही नहीं।

यदि सन्देह है कि परलोक है या नहीं इस सन्दर्भ में तुम्हें दो बातों पर ध्यान देना है। पहली बात है- अशुभ, पाप का काम छोड़ दो। दूसरी बात है शुभ और अच्छे काम करो। इस मार्ग पर चलने से मानलो पुनर्जन्म नहीं है तो तुम्हारा नुक़सान नहीं होगा। वर्तमान जीवन तो अच्छा रहेगा। अगर परलोक, पुनर्जन्म और पुण्य-पाप के फल हैं तो भी अच्छा रहेगा।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने कहा कि आचार्यवर दूसरी बार कच्छ की यात्रा करवा रहे हैं। तेरापंथ धर्म संघ एक तेजस्वी धर्म संघ है। इसकी तेजस्विता उत्तरोतर बढ़ रही है। इस तेजस्विता का कारण है कि संघ के प्रत्येक सदस्य में श्रद्धा, अनुशासन की भावना कूट-कूट कर भरी है।

गण की डोर एक आचार्य के हाथ में है। गुरु की दृष्टि में ही सृष्टि है। श्रद्धा के कारण ही नये-नये आयाम स्थापित हो रहे हैं। गुरु तंत्र के कारण ही तेरापंथ प्रगति कर रहा है।

पूज्यवर के स्वागत में तेरापंथ महिला मंडल ने स्वागत गीत की प्रस्तुति दी। लब्धि व मिली मेहता ने 'बेटी तेरापंथ की' की ओर से अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

अभय के प्रयोग से हो सकता है अहिंसा का अनुपालन : आचार्यश्री महाश्रमण

त्रंबो।
26 मार्च, 2025

जीवन नैया के कर्णधार अभय प्रदाता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अमृत देशना प्रदान कराते हुए ने फरमाया कि उन जिनों, वीतरागों को, तीर्थंकरों को नमन है, जिन्होंने भय को जीत लिया है। वह आदमी बहुत सुखी हो सकता है, जिसको किसी भी प्रकार का, किसी भी ओर से भय नहीं होता। न मौत का, न रोग का, न अपमान का, न अंधकार का भय। जिसे किसी भी प्राणी से भय नहीं है वह सुख का एक बड़ा आयाम प्राप्त कर लेता है। डरना कमजोरी है तो डराना भी गलत है। अभय का एक विभाग है - डरना नहीं तो दूसरा विभाग है - किसी को डराना भी नहीं। व्यक्ति के मोह, परिग्रह और आसक्ति है तो इनका वियोग भय का कारण हो सकता है। जहां मोह, राग, ममत्व है वहां भय हो सकता है। साधु तो दया मूर्ति होते हैं, वे किसी के प्रति मन में गांठ नहीं रखते हैं। साधु तो क्षमा धर्म वाले होते हैं। हम किसी प्राणी की हिंसा न करें, अभयदान दें। अगर कोई हिंसा करता है तो उसे समझाकर साधु उसकी हिंसा छुड़वा देते हैं।

दूसरों को डराए नहीं और स्वयं भी समता में रहे। छोटी-छोटी बातों में हम अहिंसा का ध्यान दे सकते हैं। स्थावर जीवों के प्रति भी अहिंसा रखें। प्राणियों के प्रति मैत्री की भावना रहे। सबके साथ शांति से रहें। सब के साथ सद्भावना रखें। धार्मिक व आध्यात्मिक सहयोग देने का प्रयास करें।

सूक्ष्म जीव जो दिखाई नहीं देते उन्हें भी जैन धर्म में जीव माना गया है। चलें तो देख-देख कर चलें, साधु तो ईर्या-समिति में पूर्णतया जागरूक रहे। संयम है तो अहिंसा हो जाती है। गृहस्थ जीवन में जितना धर्म, संयम, त्याग-प्रत्याख्यान कर सकें, तपस्या कर सकें, वह आत्मा की बड़ी सम्पति है। सम्पति बढ़ती रहे, अच्छी रहे, यह काम्य है।

पृष्ठ 1 का शेष

विक्रम संवत् 2082 के...

समय हमारे जीवन से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है, और प्रकृति से हमें समय सहज रूप में प्राप्त होता है। जीवन की व्यस्तता में से कुछ समय धर्म के लिए भी निकालना चाहिए। यदि व्यक्ति सचेत रहे, तो समय अवश्य निकल सकता है। अस्त-व्यस्त न बनें, मन शांत रखें, मन में प्रसन्नता बनाए रखें। जो कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण हों, उन्हें प्राथमिकता दें और जो कम आवश्यक ना हों, उन्हें त्याग दें।

समय का नियोजन करें। इसे हम 'केवली समुद्घात' के उदाहरण से समझ सकते हैं—कि थोड़े समय में भी कर्मों को कैसे भोगा जा सकता है। यह उदाहरण आयुष्य कर्म सहित शेष तीन घाति कर्मों पर लागू होता है। समय का योजनाबद्ध उपयोग करें। काल तो निरंतर बीत रहा है, परंतु हमें उस बीतते समय को फलदायी बनाना है।

विक्रम संवत् 2082 में हम जैन विश्व भारती, लाडनूं पहुँच जाएंगे और विक्रम संवत् 2083 का संपूर्ण वर्ष वहीं पर व्यतीत होगा—ऐसी आशा है। उत्तर गुजरात, अहमदाबाद की यात्रा, कंटालिया और सिरियारी की यात्रा इसी वर्ष संपन्न हो सकती है। आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष का शुभारंभ भी इसी वर्ष होने जा रहा है। हम सभी इन कार्यक्रमों का यथोचित लाभ उठाने का प्रयास करें और समय का सदुपयोग करें। इसके साथ ही आचार्यश्री ने नववर्ष के शुभारम्भ के संदर्भ में उपस्थित श्रद्धालुओं को वृहद् मंगलपाठ सुनाकर आशीर्वाद प्रदान किया।

आचार्यश्री के स्वागत में वर्षा खंडोर, अशोक खंडोर ने अपनी अभिव्यक्ति दी। 'बेटी तेरापंथ की' सदस्या पुनीता पारेख आदि बेटियों ने स्वागत गीत का संगान किया।

क्रोध रूपी जहर को निगलने वाला बन जाता है भगवान

राजाजीनगर।

आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी संयमलताजी के सान्निध्य में एंगर मैनेजमेंट कार्यशाला का आयोजन किया गया। साध्वीश्री ने क्रोध से उत्पन्न हुई ऊर्जा का सही उपयोग का तरीका बताते हुए श्रावकों को कहा- क्रोध रुपी जहर को निगलने वाला भगवान बन जाता है। क्रोध में व्यक्ति की विवेक रूपी आँख बंद हो जाती है और वाणी पर लगाम नहीं रहती है अतः क्रोध रूपी विभाव को बदलने हेतु प्रैक्टिकल प्रयोग करने होंगे। साध्वीश्री ने कहा कि क्रोध से उत्पन्न ऊर्जा का प्रयोग लेखन, कला, साहित्य में करके व्यक्ति आकाश की ऊँचाइयों को छूने का प्रयास करे। साध्वी मार्दवश्रीजी ने अर्हम की ध्वनि के साथ ज्योति केंद्र प्रेक्षा का प्रयोग करवाया। इस अवसर पर तेरापंथ सभा परिवार, तेयुप साथीगण एवं महिला मंडल की अच्छी उपस्थिति रही।

'माया बनाम माया' कार्यशाला में साध्वी संयमलताजी ने श्रावकों को संबोधित करते हुए कहा- माया मित्रता को नाश करने वाली होती है। माया की चमक मानव को भ्रमित करने वाली है। आज व्यक्ति अपनी हर श्वास पैसे में लगा रहा है पर एक पैसा भी उस श्वास में नहीं लगता है अतः व्यक्ति पैसे तो कमाए पर माया से अशुभ कर्मों का बंधन करने से बचे। एक छोटी सी माया हमारे अनेक भवों को बिगाड़ देती है। साध्वीश्री ने अनेक घटनाओं के माध्यम से माया के दुष्परिणाम बताते हुए माया को कम करने की प्रेरणा दी। साध्वीवृंद ने गीतिका के माध्यम से माया की व्याख्या की। साध्वी रौनकप्रभाजी ने माया का अर्थ बताते हुए भगवान मल्लिनाथ के जीवन में हुई माया के परिणाम को बताया।

इस अवसर पर तेरापंथ सभा राजाजीनगर के अध्यक्ष अशोक चौधरी एवं सभा परिवार, तेयुप अध्यक्ष कमलेश चौरडिया एवं तेयुप परिवार, महिला मंडल अध्यक्ष उषा चौधरी एवं महिला मंडल परिवार एवं श्रावक समाज की अच्छी उपस्थिति रही।

साइक्लोथॉन का भव्य आयोजन

कनॉट प्लेस, नई दिल्ली।

टीपीएफ दिल्ली की ओर से एक साइक्लोथॉन का आयोजन किया गया, जिसमें 75 से अधिक लोगों ने साइकिल चलाई और 100 से अधिक लोगों ने कार्यक्रम में उपस्थिति दर्ज कराई। इस आयोजन में 9 वर्ष के बच्चों से लेकर 60 वर्ष की उम्र तक के लोगों ने भाग लिया और साइक्लिंग के माध्यम से शिक्षा एवं फिटनेस के प्रति जागरूकता फैलाने का संदेश दिया। कार्यक्रम की शुरुआत टीपीएफ दिल्ली के वाइस प्रेसिडेंट पांची जैन द्वारा नवकार मंत्र के साथ की गई। इसके बाद, टीपीएफ दिल्ली की अध्यक्ष कविता बरड़िया ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया और साइक्लोथॉन एवं टीपीएफ के उद्देश्यों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। रमेश कांडपाल एवं उनके सहयोगियों ने उपस्थित लोगों को योगाभ्यास कराया।

साइक्लोथॉन के गिफ्ट स्पॉन्सर एवं मुख्य अतिथि अतुल जैन ने साइक्लोथॉन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। यह यात्रा दिल्ली के अणुव्रत भवन से शुरू होकर कनॉट प्लेस तक गई, जहां सभी को एरोबिक्स कराया गया। इसके बाद, साइक्लोथॉन पुनः अणुव्रत भवन की ओर रवाना हुई। इस दौरान, प्रतिभागियों ने लगभग 6 किलोमीटर की दूरी साइकिल से तय की। टीपीएफ गौरव और टीपीएफ दिल्ली के एडवाइजर के.सी. जैन एवं दिल्ली पुलिस ने इस आयोजन को सफलतापूर्वक संपन्न कराने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। हिमांशु कोठारी और गौतम डुंगरवाल का भी श्रम नियोजित हुआ।

कार्यक्रम के दौरान, टीपीएफ दिल्ली के एडवाइजर श्रील लुंकर भी उपस्थित रहे, जिन्होंने सभी प्रतिभागियों को प्रेरित किया। इस अवसर पर सभा अध्यक्ष सुखराज सेठिया भी कार्यक्रम में शामिल हुए, जिन्होंने आयोजन की सराहना की और सभी प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया। साइक्लोथॉन में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को उपहार प्रदान किए गए। इसके अतिरिक्त, प्रारंभिक 40 रजिस्ट्रेशनों में से लकी ड्रा के माध्यम से भी गिफ्ट वितरित किए गए। सभी प्रतिभागियों को टीपीएफ दिल्ली की ओर से प्रमाणपत्र भी प्रदान किए गए। इस कार्यक्रम के संयोजक वैभव जैन रहे, जिन्होंने साइक्लोथॉन के रूट निर्धारण, साइकिलों की व्यवस्था और संपूर्ण आयोजन की रूपरेखा तैयार करने में अहम भूमिका निभाई। कार्यक्रम के अंत में, टीपीएफ दिल्ली के सेक्रेटरी हिमांशु कोठारी ने सभी का आभार व्यक्त किया।

प्रेक्षा प्रवाह : शक्ति एवं शान्ति की ओर

मदुरै।

अभातेममं निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल द्वारा स्थानीय तेरापंथ भवन में कार्यक्रम का शुभारंभ सीमंधर स्वामी की स्तुति के साथ हुआ। महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेक्षाध्यान गीत का संगान किया गया। मुख्य वक्ता बबीता गिड़िया ने इम्युनिटी बढ़ाने के उपाय बताये। महिलाओ को प्रोटीन, कैल्शियम, आयरन और पानी की समुचित मात्रा की जानकारी दी। बबीता गिडिया ने योग और प्राणायाम के प्रयोग करवाते हुए दिन की शुरुआत योग से करने की प्रेरणा देते हुए बहनों की जिज्ञासाओं का समाधान भी किया। आभार ज्ञापन पूजा कोठारी ने किया। अध्यक्ष लता कोठारी ने मुनि हिमांशुकुमार जी ठाणा 2 के विहार सेवा की जानकारी दी।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री सुनीता कोठारी ने किया।

आध्यात्मिक एवं ज्ञानवर्धक प्रवास में खिले विभिन्न रंग

बलांगीर।

समणी निर्देशिका डॉ. ज्योतिप्रज्ञा जी व डॉ. समणी मानसप्रज्ञा जी ने बलांगीर उपकेंद्र में प्रवेश किया। भाई-बहनों ने गीतों के माध्यम से समणी जी का स्वागत किया। पश्चिमी उड़ीसा स्तरीय स्वागत समारोह में टिटिलागढ़, केसिंगा, कांटाबांजी, सिधिकेला, तुसरा, कुरसुड आदि अनेक क्षेत्रों के भाई-बहन उपस्थित थे। उड़ीसा प्रांतीय अध्यक्ष मनोज जैन, मंत्री सुदर्शन जैन, साहित्यकार तुलसी जैन, मुकेश जैन, जय भगवान, रामनिवास जैन, जगदीश प्रसाद, विकास जैन, अजय जैन आदि ने समणी जी का स्वागत करते हुए अपने-अपने क्षेत्रों में अधिकाधिक प्रवास करने की प्रार्थना की।

रात्रि में भिक्षु धम्म जागरण का कार्यक्रम चला। समणी निर्देशिका ज्योतिप्रज्ञा जी ने शक्ति संपन्न बनने की प्रेरणा देते हुए कहा – तप व जप आत्मा की सुप्त शक्तियों को जागृत करते हैं। आगामी 8 जुलाई को आचार्य भिक्षु का 300वां जन्म दिवस है। इस उपलक्ष्य में पश्चिमी उड़ीसा वासियों को 'भिक्खू स्याम' इस नवाक्षरी मंत्र के ग्यारह कोटि जप की श्रद्धा अर्पित करनी है। इसके साथ ही तप की दृष्टि से 2025 की होली से आगामी होली तक एक वर्ष तक एकासन की बारी चलानी है।

फाल्गुन शुक्ला चतुर्दशी - शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी की वार्षिक पुण्यतिथि पर भाई-बहनों ने भजनों के माध्यम से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। समणी मानसप्रज्ञा जी ने शासनमाता के प्रति विचार व्यक्त करते हुए कहा – वे कुशल लेखिका, प्रखर वक्ता, गीतकार, प्रवचनकार तथा प्रबंधन जैसी अनेक विशेषताओं से संपन्न थीं।

चातुर्मास पक्खी के दिन प्रतिक्रमण कर भाई-बहनों ने क्षमायाचना की। समणी जी ने होली का इतिहास बताते हुए पवित्र बनने की प्रेरणा दी। रात्रिकालीन कार्यक्रम के अंतर्गत कवि सम्मेलन का भव्य आयोजन हुआ, जिसमें कवि रोहित तथा कवि मनोज विशेष रूप से उपस्थित थे। फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें ज्ञानशाला की प्रस्तुति आकर्षक रही।

कटक से समुपस्थित गायिका व प्रखर वक्ता निहारिका सिंघी ने 'माता-पिता का बच्चों के प्रति दायित्व एवं बच्चों का माता-पिता के प्रति दायित्व' विषय पर अपने सुंदर विचार रखे। पुष्पा सिंघी ने कविता पाठ किया। रात्रिकालीन कार्यक्रम के दौरान कभी अंताक्षरी, कभी प्रश्नोत्तरी जैसे ज्ञानवर्धक कार्यक्रम आयोजित किए गए। 'दस का दम' प्रतियोगिता से सभी की एकाग्रता व मानसिक क्षमता की परीक्षा हुई। इस प्रतियोगिता में लगभग 21 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिसमें आठ प्रतिभागियों ने प्रथम तथा दो ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

शुभ संकल्पों के साथ नव वर्ष का करें प्रारंभ

वेलाचेरी, चैन्नई।

चैन्नई के वेलाचेरी क्षेत्र स्थित श्री एस.एस.जैन स्थानक में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि दीप कुमारजी के सान्निध्य में भारतीय नववर्ष 2082 के प्रारंभ के अवसर पर मंत्रानुष्ठान, प्रवचन एवं वृहद् मंगलपाठ का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर मुनि दीप कुमारजी ने कहा - हम शुभ संकल्पों के साथ नए वर्ष का प्रारंभ करें। जिसके संकल्प दृढ होते हैं वह हर कार्य में सफलता हासिल कर सकता है। रोज संकल्पो को दोहराएं। नए वर्ष का प्रारंभ प्रसन्नता के साथ करें।मानव जीवन हताश, निराश होने के लिए नहीं मिला है। जो सदा प्रसन्न रहना सीख लेता है वह आने वाली हर मुसीबत को पार कर देता है। इस वर्ष परिवारों में यह संकल्प हो हम हमारे परिवारों को संस्कारी बनाएंगे। आज युग बदल रहा है इसमें सद्संस्कारों का होना बहुत जरूरी है तभी हम हमारी संस्कृति को जीवित रख सकेंगे। मुनि श्री ने इस अवसर पर आगमिक-आध्यात्मिक मंत्रों का अनुष्ठान करवाया, जिसमें मुनि काव्य कुमार जी ने भी सहसंगान किया।

अंत में वृहद मंगल पाठ के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
07 अप्रैल - 13 अप्रैल, 2025
हे प्रभो! यह तेरापंथ

संक्षिप्त खबर

प्रेक्षा प्रवाह कार्यशाला का हुआ भव्य आयोजन

अहमदाबाद। तेरापंथ महिला मंडल एवं प्रेक्षा वाहिनी के संयुक्त तत्वावधान में 'मेडिटेट तो बूस्ट योर इम्युनिटी' कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के साथ हुआ। महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेक्षाध्यान गीत का संगान किया गया। अध्यक्षा हेमलता परमार ने सभी अथितियों का स्वागत किया। मुनि डॉ. मदनकुमार जी ने महाप्राण ध्वनि एवं नमस्कार महामंत्र का चमकते हुए नीले रंग में शक्ति केंद्र पर प्रयोग कराया। ट्रेनर मौलैश भाई ने इम्युनिटी बढ़ाने के उपाय बताये। मुख्य वक्ता एवं ट्रेनर इलाशी बेन ने अपने विचार व्यक्त किए। इंस्पेक्शन कोर्डिनेटर कृष्णा जाडेजा ने योगासन करवाया। इलाशी बेन ने प्राणायाम के प्रयोग करवाए। कार्यक्रम संयोजिका रंजना डांगी एवं पिस्ता बाई छाजेड़ ने मंगल भावना का संगान किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में रेखा सुरतिया, श्वेता लूनिया, रेखा धूपिया का विशेष श्रम रहा। कार्यक्रम का कुशल संचालन रेखा सुरतिया ने किया। आभार ज्ञापन मंत्री बबीता भंसाली ने किया।

पैंसठिया यंत्र अनुष्ठान कार्यक्रम का आयोजन

भुसावल। तेरापंथ भवन भुसावल में मुनि अर्हत कुमार जी के सान्निध्य में पैंसठिया यंत्र अनुष्ठान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुनि अर्हत कुमार जी ने कहा कि पैंसठिया यंत्र एक विशिष्ट स्तोत्र है जिससे अनेक सिद्धियां प्राप्त हो सकतीं हैं। यह स्तोत्र विघ्न विनाशक, विद्या विकासक, उपद्रव निवारक है। इसका विधिवत जप करने से मानसिक शांति मिलती है। मुनि भरत कुमार जी ने अनुष्ठान करवाया। कार्यक्रम में तेरापंथ समाज के पदाधिकारीगण और श्रावक समाज ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव कैंप का आयोजन

पीलीबंगा। तेरापंथ युवक परिषद् पीलीबंगा द्वारा क्षेत्र में ब्लड की कमी को देखते हुए नोहर ब्लड बैंक के सहयोग से मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव कैंप का आयोजन नेहरू धर्मशाला पीलीबंगा में आयोजित किया। रक्तदान शिविर की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से की गई। तेयुप अध्यक्ष अंजन बोथरा ने कहा कि तेयुप पीलीबंगा अखिल भारतीय तेयरापंथ युवक परिषद् के निर्देशानुसार एमबीडीडी आयाम के तहत हर वर्ष रक्तदान शिविर आयोजित करती है। शिविर प्रायोजक एसएस प्लाईवुड का आभार प्रकट करते हुए कैंप प्रभारी पंकज डाकलिया ने श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा अध्यक्ष मालचंद पुगलिया, विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारी एवं गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। ब्लड बैंक के सहयोग से कुल 68 यूनिट रक्त का संग्रह हुआ। ब्लड बैंक ने परिषद् परिवार को सम्मानित करते हुए धन्यवाद व्यक्त किया। तेयुप मंत्री रूपेश सुराणा ने सभी रक्तदाताओं को धन्यवाद ज्ञापन किया। शिविर के सुव्यवस्थित आयोजन में कार्यकर्ताओं का अथक श्रम नियोजित हुआ।

- आदर्श चुनने के साथ संकल्प बल का होना भी अपेक्षित है। संकल्प बल के साथ उत्साह व साहस भी बना रहना चाहिए।
- जो व्यक्ति भाग्य भरोसे बैठ जाता है, पुरुषार्थ नहीं करता, मेरी दृष्टि में वह दुनिया का अभागा व्यक्ति है।

– आचार्य श्री महाश्रमण

तिन्नाणं तारयाणं सूत्र के साथ निरन्तर गतिमान हैं साधु-साध्वी

कैलाश कॉलोनी, दक्षिण दिल्ली।

आचार्यश्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी कुन्दनरेखाजी एवं गुरु संदेशवाहक बन कर आये मुनि अभिजीत कुमार जी का आध्यात्मिक मिलन हीरालाल गेलड़ा के निवास स्थान पर हुआ। इस अवसर पर साध्वी कुन्दररेखा जी ने कहा- तेरापंथ धर्मसंघ में नित नये इतिहास का सृजन होता रहा है। भैक्षव शासन अध्यात्म के आकाश को छूने की तरफ यात्रायित है। तिन्नाणं तारयाणं सूत्र को चरितार्थ करते हुए इस धर्मसंघ के साधु-साध्वी निरन्तर गतिमान हैं।

सर्व प्रथम संदेशवाहक बनकर मुनिश्री ने आचार्य प्रवर के पावन कर कमलों से लिखित पत्र को जैसे ही प्रदान किया, साध्वी कुन्दनरेखा जी आदि साध्वियों के कण-कण में खुशियों का संचार होता देखा गया। इस अवसर पर साध्वी कुन्दनरेखाजी ने कहा यह पत्र हमारे आध्यात्मिक जीवन की प्रगति एवं विकास का मात्र पर्याय नहीं, बल्कि सुरक्षा छत्र है। साध्वीश्री ने आगे कहा मुनिद्वय एक लम्बी यात्रा हेतु प्रस्थान के लिए तैयार हैं। विनय, विवेक, विद्या एवं पुरुषार्थ के द्वारा आप को सफलता मिले। गुरु की छवि पल-पल आपका पथ दर्शन करेगी। मुनिद्वय को आगामी यात्रा के प्रति बहुत-बहुत शुभकामना।

साध्वी सौभाग्ययशा जी, साध्वी कल्याणयशाजी ने गीत का संगान किया। मुनि जागृत कुमार जी ने आगामी सप्तवर्षीय यात्रा एवं गुरुदेव द्वारा प्रदत्त मंगल आशीर्वाद की विस्तार से चर्चा की। मुनिद्वय के नाम गुरूदेव द्वारा प्रदत्त संदेश का वाचन साध्वी कुन्दनरेखा द्वारा किया गया। मुनि अभिजित कुमारजी ने कहा- गुरु हमारी शक्ति, भक्ति और अनुरक्ति है। गुरुदेव द्वारा मिला प्रकाश, आश्वास और विश्वास हमारा संबल है। आचार्य प्रवर की स्नेहिल नजर के चलते विदेश यात्रा का अनुचिंतन हुआ। मुनिश्री ने सप्तवर्षीय योजना का उल्लेख करते हुए कहा कि गुरुदेव की कृपा और अनुकम्पा से हमें अलग-अलग देशों के अलग-अलग लोगों का सहयोग मिल रहा है, जो इस बीहड़ मार्ग को सुगम बनायेगा। आज साध्वी त्रय से मिलकर अत्यधिक हर्ष एवं उल्लास की अनुभूति हो रही है।

गेलड़ा परिवार के मिलाप गेलड़ा, दक्षिण दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुशील पटावरी, पूर्व अध्यक्ष हीरालाल गेलड़ा, अरविंद दुगड़, तेरापंथ सभा के पूर्व अध्यक्ष गोबिंद बाफणा, वर्तमान उपाध्यक्ष गिरीश जैन, महिला मण्डल की मंत्री वर्षा बैंगाणी, संजय चौरड़िया पूर्व अध्यक्ष दक्षिण दिल्ली ने स्वागत भाषण द्वारा मुनिद्वय का अभिनन्दन किया। दक्षिण दिल्ली के गणमान्य व्यक्ति इस अवसर पर काफी संख्या में उपस्थित रहा।

भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

मंड्या।

साध्वी सिध्दप्रभाजी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद् मंड्या द्वारा भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन स्थानीय तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री द्वारा मंगल मंत्रोच्चार के साथ हुई। तेयुप सदस्यों द्वारा विजयगीत का संगान हुआ। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन परिषद् के पूर्व अध्यक्ष प्रवीण दक द्वारा किया गया। उपस्थित श्रावक समाज का स्वागत परिषद् अध्यक्ष कमलेश गोखरू ने किया। साध्वी सिध्दप्रभाजी ने कहा- आचार्य भिक्षु क्रान्तिकारी पुरुष थे। तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक थे। उनका दर्शन था त्याग धर्म - भोग अधर्म, व्रत धर्म - अव्रत अधर्म, आज्ञा धर्म - अनाज्ञा अधर्म, बल-प्रयोग में धर्म नहीं, हृदय परिवर्तन में धर्म आदि। आज तेरापंथ के चार पिलर हैं - आचार, मर्यादा, अनुशासन और संगठन। यहाँ आचार्य सर्वेसर्वा होते हैं। हम सब का कर्तव्य है गुरु दृष्टि की आराधना करना और संघ की प्रभावना करना। ऐसा कोई काम न करें, जिससे जैन धर्म, तेरापंथ की अप्रभावना हो।

साध्वी आस्थाप्रभाजी ने सुमधुर गीत के द्वारा भिक्षु दर्शन को समझाया। युवक परिषद् के पूर्व अध्यक्ष संदीप आच्छा के द्वारा पुष्पाश्रय -2 के निर्माण हेतु तेरापंथ युवक परिषद् के द्वारा उनका सम्मान किया गया। आभार ज्ञापन युवक परिषद् मंत्री प्रदीप भंसाली ने किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन प्रवीण दक ने किया।

मंत्र आराधना अनुष्ठान का आयोजन

चिकमंगलूर।

डॉ. मुनि पुलकित कुमार जी के सान्निध्य में कर्नाटक की उच्चतम पहाड़ी चोटी मूल्यानगिरी पर्वत पर जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभ प्रभु दीक्षा कल्याणक दिवस के उपलक्ष्य में सर्वोच्च शिखर आरोहण मंत्र आराधना अनुष्ठान का आयोजन श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा चिकमंगलूर द्वारा किया गया। तीर्थंकर आदिनाथ प्रभु के विभिन्न स्तोत्र एवं प्रभावशाली प्राचीन मंत्रो का अनुष्ठान मुनिश्री ने कराया। इस अवसर पर श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए मुनिश्री ने कहा हमें अध्यात्म के सर्वोच्च शिखर मोक्ष पर चढ़ने की तैयारी करनी है।

'नचिकेता' मुनि आदित्य कुमार जी ने विचार प्रकट किए। मल्यप्पा स्वामी मंदिर मठ के पुजारी शिवशंकर स्वामी ने मुनिश्री का स्वागत करते हुए मंदिर परिसर की जानकारी दी। बेंगलुरु तेरापंथ सभा अध्यक्ष पारसमल भंसाली, मंत्री विनोद छाजेड़, तेरापंथ युवक परिषद बेंगलुरु के अध्यक्ष विमल धारीवाल, तेरापंथ सभा चिकमंगलूर के अध्यक्ष महेंद्र डोसी, ताराचंद सेठिया तेयुप अध्यक्ष जयेश गादिया मंत्री राकेश कावड़िया टीएफ अध्यक्ष हर्षित डोसी ने विचार व्यक्त किए। तेरापंथ महिला मंडल की सदस्याओं ने आदिनाथ भगवान की स्तुति में गीत प्रस्तुत की।

मूल्यानगिरी पर अनुष्ठान में चिकमंगलूर, बेंगलुरु एवं नजदीकी क्षेत्रों से श्रावक समाज उपस्थित था।

संक्षिप्त खबर

समता और आत्म बल का प्रतिरूप है संथारा

राजगढ़ सादुलपुर। सादुलपुर के स्व. झूमरमल बैद की धर्मपत्नी सिरेकंवरी देवी के 56 दिवसीय संथारे की संपन्नता पर सेठिया भवन में श्रद्धांजलि सभा में उद्बोधन देते हुए 'शासनश्री' साध्वी विद्यावतीजी ने कहा कि संथारा महातप है और समता एवं आत्म बल का प्रतिरूप होता है। साध्वीश्री ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ सेवा, त्याग और समर्पण का प्रतीक है। साध्वी सूर्ययशाजी ने संथारे की महत्ता का उल्लेख करते हुए नवरात्र अनुष्ठान की जानकारी दी। कार्यक्रम में साध्वी दिव्यप्रभाजी, साध्वी प्रशस्तप्रभाजी, सभा अध्यक्ष अमरचंद कोठारी, मंत्री विनोद कोचर, युवक परिषद अध्यक्ष प्रमोद दुगड़, श्याम जैन, परिजन एवं अन्य वक्ताओं ने सिरे कंवरी देवी के त्याग और तप पर विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर उपस्थित जनता ने साध्वी वृन्द से विभिन्न अध्यात्मिक संकल्प तथा त्याग-प्रत्याख्यान स्वीकार किए। कार्यक्रम का संयोजन उषा दूगड़ ने किया।

रियायती डायबिटीक चेक-अप

राजाजीनगर। तेरापंथ युवक परिषद् राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम में शासनमाता साध्वीप्रमुखा श्री कनकप्रभाजी की तृतीय वार्षिक पुण्यतिथि पर रियायती दर पर डायबिटीक हेल्थ चेक-अप का आयोजन किया गया। सर्व प्रथम नमस्कार महामंत्र का सामूहिक उच्चारण करते हुए गुरुदेव द्वारा प्रदत्त शासनमाता के जप से कैम्प की शुरुआत हुई। डायबिटीक हेल्थ चेक-अप के अंतर्गत फास्टिंग ब्लड शुगर, पोस्ट प्रैंडियल ब्लड शुगर, तीन महीने की औसत ब्लड शुगर, लिपिड प्रोफाइल, कोलेस्ट्रॉल, सिरम क्रिएटिनिन, इलेक्ट्रो कॉर्डियोग्राम जांच सम्मिलित किये गये। इस कैम्प से 47 सदस्य लाभान्वित हुए। शिविर हेतु माणिकचंद विनोदकुमार सुरेंद्र कुमार, किशोरकुमार सकलेचा परिवार का आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ। तेयुप से जयंतीलाल गाँधी, राजेश देरासरिया, मिलन गाँधी, साहिल सहलोत एवं अभिषेक पीपाडा ने अपनी सेवाएं प्रदान की।

'कैसे थामे रिश्तों की डोर' कार्यशाला का आयोजन

चिकमगलुरु। साध्वी सोमयशाजी के सान्निध्य में 'कैसे थामे रिश्तों की डोर कार्यशाला' का आयोजन किया गया। कार्यशाला की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के मंगलाचरण से हुई। महिला मंडल की बहनों ने संकल्प गीत का संगान किया। साध्वी सोमयशाजी ने 'महिला' शब्द का अर्थ समझाते हुए कहा की महिला ममता, हिम्मत और लज्जा की प्रतिरूप होती है। साध्वी ऋषिप्रभा जी ने कहा की रिश्तों की डोर को मजबूत बनाने के लिए धैर्यवान होना जरूरी है।

साध्वी डॉ. सरलयशाजी ने कहा कि रिश्ते तरह-तरह के होते हैं। आपने रिश्तों में मजबूती बनाने के लिए 3 टी का फार्मूला समझाते हुआ कहा कि टॉलरेंस, टॉक और ट्रस्ट जरूरी है। कार्यशाला में यह भी समझाया गया कि रिश्तों को मजबूत बनाने के लिए शिक्षा का विकास, स्वास्थ्य, व्यसनमुक्त परिवार, स्वतंत्रता, संगठित होना ये सारे मुख्य बिन्दु हैं। इस अवसर पर महिला मंडल की अध्यक्ष गुणवन्ति नाहर के साथ महिला मंडल परिवार की अच्छी उपस्थिति रही। करुणा गादिया ने आभार व्यक्त किया।

> ❖ हर व्यक्ति के मन में कुछ होने की कामना हो। इसके लिए कुछ अपेक्षानुसार कठोर जीवन जीने का अभ्यास करना चाहिए। जीवन में प्रतिस्रोतगामिता रहे।
>
> — आचार्य श्री महाश्रमण

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

जैन संस्कार विधि

नूतन गृह प्रवेश

■ **साउथ कोलकाता।** आनंद लूनिया का गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से उनके नवीन निवास स्थान 'शीतल सदन' में जैन संस्कारक महेंद्र दुगड़ ने पूरे मंत्रोच्चार के साथ सम्पन्न करवाया।

वीतराग पथ कार्यशाला का आयोजन

राजाजीनगर।

साध्वी संयमलताजी के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा वीतराग पथ कार्यशाला का आयोजन अभातेयुप के वरिष्ठ उपाध्यक्ष पवन मांडोत की अध्यक्षता में स्थानीय तेरापंथ भवन में हुआ।

कार्यशाला का शुभारंभ साध्वीश्री के मंगलाचरण द्वारा हुवा, विजय गीत का संगान भिक्षु श्रद्धा स्वर समूह द्वारा किया गया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन अभातेयुप उपाध्यक्ष पवन मांडोत द्वारा किया गया। तेयुप अध्यक्ष कमलेश चौरड़िया ने सभी का स्वागत करते हुए अपने विचार व्यक्त किये। सभा अध्यक्ष अशोक चौधरी ने तेयुप के प्रति शुभकामनाएं संप्रेषित की।

साध्वी संयमलता जी उद्बोधन प्रदान करते हुए बच्चों एवं माता- पिता को प्रेरित करते हुए कहा, 'वीतराग पथ जीवन की भोर को सक्षम एवं उज्जवल बनाने वाली है। माता-पिता भी जीवन रूपी खेत में संस्कारों की खाद, संयम के बीज व अनुशासन रूपी जल की सिंचाई कर एक अखण्ड व्यक्तित्व का निर्माण करें। ये बच्चे वीतराग पथ पर अग्रसित होकर तेरापंथ धर्म संघ की सेवा करते हुए मंजिल को प्राप्त करें।

साध्वी मार्दवश्रीजी ने बच्चों को छोटे-छोटे संकल्प एवं व्रत धारण करने की प्रेरणा दी। अभातेयुप वरिष्ठ उपाध्यक्ष पवन मांडोत ने एक बस यात्रा का रोचक उदाहरण देते हुए कहा कि हमारे आराध्य एवं चारित्र आत्माओं से निकटता बनाए रखने से हमारा जीवन सफलता की ओर अग्रसर होगा।

शाखा प्रभारी दिनेश मरोठी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा शांतिमय जीवन हेतु संयम की ओर अग्रसर हो एवं परिवार के सदस्य अगर इस राह पर आगे बढ़े तो उनके सहयोगी बनें। कार्यशाला में लगभग 130 सदस्यों की उपस्थिति रही जिसमें ज्ञानशाला से लगभग 63 बच्चों की रही उपस्थिति। इस अवसर पर संघीय संस्थाओं के गणमान्य पदाधिकारियों और श्रावक समाज की उपस्थिति रही।

अर्जन के साथ है विसर्जन का महत्त्व

हैदराबाद।

आई डी पी अल स्थित नव निर्मित श्री तुलसी महाप्रज्ञ भवन में साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी का पदार्पण हुआ। इस अवसर पर सुचित्रा और आईडीपीएल की ज्ञानशाला के विद्यार्थियों और प्रशिक्षिकाओं को विशेष रूप से प्रेरित किया गया। आईडीपीएल की ओर से पूर्व तेयुप अध्यक्ष श्रवण कोठारी ने भवन निर्माण की गति प्रगति की जानकारी देते हुए स्वागत वक्तव्य दिया। साध्वी डॉ. गवेषणाश्रीजी ने अपने वक्तव्य में अर्जन के साथ विसर्जन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि विसर्जन की शक्ति ही अनासक्त चेतना का प्रकाश है। उन्होंने श्रोताओं को त्याग और अनासक्ति के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। साध्वी दक्षप्रभाजी ने सुमधुर गीतिका से श्रावक-श्राविका समाज को प्रेरणा दी।

मेघा पुगलिया ने मधुर स्वागत गीतिका प्रस्तुत की। प्रेम बैंगानी और महेंद्र दुगड़ ने अपने अनुभव साझा करते हुए सभी को भवन में सहयोग करने की प्रेरणा दी। सिकंदराबाद तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुशील संचेती ने ट्रस्ट परिवार को बधाई दी और ज्ञानशाला के संचालन में हर संभव सहयोग का आश्वासन दिया। तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष अभिनंदन नाहटा ने संगठन के त्रिआयामी उद्देश्यों पर बात रखते हुए भवन में चिकित्सा संबंधी स्थायी परियोजना के लिए सहयोग का प्रस्ताव रखा। ट्रस्ट परिवार की ओर से सुमेरसिंह नाहटा ने आभार व्यक्त किया।

'एक शाम आचार्य भिक्षु के नाम' भक्ति कार्यक्रम

मैसूरु।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम मैसूरु के तत्वावधान में 'एक शाम आचार्य भिक्षु के नाम' भक्ति कार्यक्रम आयोजित किया गया। तीन घंटे चले भक्ति कार्यक्रम में तीर्थंकरों एवं आचार्यों की स्तुति में संगायक कमल सेठिया ने मधुर भजनों की प्रस्तुति देकर श्रोताओं को भाव विभोर किया। टीपीएफ राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मांडोत ने टीपीएफ के कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी दी। टीपीएफ मैसूरु के अध्यक्ष प्रकाश दक ने सभी का स्वागत किया। इस अवसर पर दक्षिणांचल अध्यक्ष विक्रम कोठारी, दक्षिणांचल पूर्वांचल एवं मैसूरु के पदाधिकारी, सभाध्यक्ष प्रकाश दक, ट्रस्ट अध्यक्ष भेरू पीतलिया, महिला मंडल अध्यक्ष लक्ष्मी भटेवरा, तेयुप अध्यक्ष विक्रम पीतलिया, अन्य संस्थाओं के पदाधिकारी सहित क़रीब 750 सदस्यों की उपस्थिति रही। मंच संचालन विमल पितलिया, खामोश मेहर एवं मुस्कान नवलखा ने किया।

भगवान महावीर जन्म कल्याणक पर विशेष

भगवान महावीर के सिद्धांत आज भी हैं प्रासंगिक

● मुनि कमलकुमार ●

भगवान महावीर इस अवसर्पिणी काल के चरम तीर्थंकर कहलाये। उनका जन्म बिहार प्रांत के वैशाली राज्य के कुंडलपुर ग्राम में हुआ। आपके पिताश्री का नाम राजा सिदार्थ और माता का नाम त्रिशला था। भगवान महावीर ही एकमात्र ऐसे तीर्थंकर हुए जो दो माताओं की कुक्षि में पले। प्रथम देवानंदा ब्राह्मणी की कुक्षि में 82 रात्रि और द्वितीय माता त्रिशला की कुक्षि में पले। भगवान महावीर का जन्म चैत्र शुक्ला त्रयोदशी के दिन हुआ। तीर्थंकरों के पाँच कल्याणक होते हैं - च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवल ज्ञान ओर निर्वाण। इन पांचों समय में देवता उत्सव मनाते हैं। नारकी के जीव भी प्रसन्नता का अनुभव करते हैं।

भगवान महावीर ने गर्भकाल में ही यह संकल्प कर लिया था कि जब तक माता-पिता जीवित रहेंगे तब तक में दीक्षा नहीं लूंगा इसी संकल्प के कारण लगभग 28 वर्षों तक वे गृहस्थावास में रहे। किशोरावस्था में उनकी शादी की गई, एक पुत्री का भी जन्म हुआ और उसकी शादी भी कर दी गई। यह सब गृहस्थावास में रहते ही हो गया। माता-पिता के स्वर्गवास के बाद उन्होंने अपने अग्रज नन्दीवर्धन से दीक्षा की अनुमति मांगी। भाई की अनुमति नहीं मिलने के कारण दो वर्षों तक घर में साधना करते रहे। उनके उत्कृष्ट वैराग्य को देखकर नन्दीवर्धन ने दीक्षा की अनुमति दे दी। अनुमति मिलते ही आपने सिद्धों की साक्षी से स्वहस्त पंचमुष्ठि लुंचन कर दीक्षा स्वीकार की। दीक्षा के समय आपने पांच संकल्प किये कि जब तक केवल ज्ञान नहीं हो तब तक मौन रहूंगा, करपात्र रहूँगा, ऐसी जगह रहूँगा जिससे किसी को कष्ट नहीं हो, साधना के लिए अच्छे स्थान की कोशिश नहीं करूंगा अर्थात शून्य स्थानों में रहूँगा, अपनी आवश्यकताओ के लिए किसी को संकेत नहीं करूँगा। इस प्रकार अपने पांचों संकल्पों को सुदृढ़मना पालते हुए आप श्रमण करते रहे।

भगवान ने साधनाकाल में कम से कम दो दिन और अधिक से अधिक छह महीने की निर्जल साधना की। वे घंटों-घंटों ही नहीं महीनों-महीनों तक मौन-ध्यान की खड़े-खड़े उत्कृष्ट साधना करते रहे। साधनाकाल में भयंकर उपसर्ग आए परंतु भगवान का चित्त कंपायमान नहीं हुआ। क्योंकि वे जानते थे कि मैंने अपने साधुत्व स्वीकार से पूर्व अनेक जन्मों में कर्मों का बंधन कर रखा है। वे जब तक समाप्त नहीं होंगे तब तक तो उपसर्ग आते ही रहेंगे। उन्होंने देवकृत, मनुष्य कृत और तिर्यंचकृत हर उपसर्ग को साम्यभाव से सहन किया। समता से हर स्थिति को सहन करना बहुत बड़ी तपस्या है और भव भ्रमण मिटाने का सुगम उपाय है। लगभग तीस वर्ष की अवस्था में दीक्षा ली, लगभग साढ़े बारह वर्ष तक तीव्र साधना करते रहे और केवल ज्ञान की उत्पत्ति के बाद तीस वर्ष तक ग्राम-ग्राम पैदल भ्रमण कर अहिंसा, संयम, तप का उपदेश देते रहे। उसी का सुपरिणाम था कि लगभग चौदह हजार साधु और छत्तीस हजार साध्वियों ने संयम ग्रहण किया। साधु-साध्वी बनने वाले महाव्रती बने तो लाखों गृहस्थ अणुव्रती बने। महाव्रत यानि संपूर्ण व्रत और अणुव्रत अर्थात आंशिक व्रत। इस प्रकार आपकी स्व-पर कल्याणकारी साधना चलती रही और बिहार प्रांत के पावापुरी में राजा हस्तीपाल की हार्दिक विनती सुनकर आपने अपना प्रवास किया और उसी प्रवास में कार्तिक कृष्णा अमावस्या की अर्धरात्रि में आपने संथारे में दिव्य देशना देते-देते नश्वर शरीर का त्याग कर निर्वाण पद को प्राप्त किया। तब से उस निर्वाण दिवस के उपलक्ष में जैनधर्म में दीपावली पर्व मनाने का क्रम चल पड़ा।

भगवान महावीर के सिद्धांत आज भी उतने ही उपयोगी है, जितने उस समय थे। अगर व्यक्ति अहिंसा, संयम, तप को अपने जीवन में अंगीकार करे तो हर विषम समस्या का भी समाधान हो सकता है। हिंसा, असंयम और भोग तो व्यक्ति को हर तरह से अशांत और दिग्भ्रांत बनाने वाले होते हैं। शांति के इच्छुक को तटस्थ, आत्मस्थ होकर चिंतन करना चाहिये और भगवान के जन्मदिवस पर इन्हें आत्मसात करने का शुभ संकल्प करना चाहिए।

करुणा के अजस्र स्रोत भगवान महावीर

● डॉ. साध्वी परमयशा ●

भगवान महावीर अध्यात्म जगत के महासूर्य थे। उनके तेजस्वी आभावलय ने सारे विश्व को नई दिशा और अभिनव दशा प्रदान की। वे एक त्यागवीर और तपोवीर थे। वे एक धर्मवीर और कर्मवीर थे। वे सत्यवीर और क्षमावीर थे। वे परमवीर और महावीर थे। गंगा पाप का, चंद्रमा ताप का एवं कल्पवृक्ष संताप का नाश करता है। भगवान महावीर जनजीवन के पाप, ताप और संताप का निवारण करने इस धरा पर आए। भारत का भला महाभारत से नहीं, त्याग और तप की इबादत से संभव है। भगवान महावीर इस पावन पवित्र वसुंधरा पर ज्योतिर्मय तपोमय त्यागमय संदेश देने आए। महात्मा गांधी के तीन बंदर कहते हैं बुरा मत बोलो, बुरा मत सुनो, बुरा मत देखो। भगवान महावीर उच्चकोटि का सुपरविजन देने वाले सुपरवाइजर थे उन्होंने कहा - बुरा मत सोचो।

क्षत्रिय कुंडग्राम के राजप्रासाद में चौदह सपनों का सिगनल देते हुए एक राजकुमार का जन्म हुआ। महारानी त्रिशला और राजा सिद्धार्थ का प्रांगण एक अद्भुत शिशु के आगमन से रोमांचित, प्रफुल्लित और उल्लसित था। बहन सुदर्शना और भाई नंदीवर्धन के हर्ष का कोई ओर छोर नहीं था। पूरा क्षत्रिय कुंडग्राम दिव्य शिशु के दिव्य आभामंडल में देदीप्यमान था। चैत्र शुक्ला त्रयोदशी का दिन धन्य कृतपुण्य था।

आजकल अक्सर बच्चों का जन्म हॉस्पिटल में होता है। उनका बचपन हॉस्टल में और जवानी का दुर्लभ समय होटल में बोटल के नशे के साथ तबाह हो जाता है। भगवान इन सबके अपवाद थे। एक संस्कार संपन्न वातावरण में रहे। जहां आम आदमी फास्ट लाइफ में भागता जा रहा है, फास्ट फूड, जंक फूड, पेक फूड से टेंशन, डिप्रेशन का शिकार हो रहा है। भगवान महावीर यूनीक वैल्यू के साथ जीते रहे। उन्होंने हाई प्रोफाईल लाईफ को जीने के लिए मिगसर कृष्ण दशमी को एक नए राजमार्ग को स्वीकार किया। साधना के सोपान पर आरोहण किया।

भगवान महावीर का जीवन दर्शन विशिष्टताओं का समवाय था। दया, अहिंसा, सद्भावना, समता, सहिष्णुता महापुंज को खास और खूबसूरत बनाती रही। उनकी जीवन शैली के ग्राफ को सर्वोत्तम बनाने वाली एक क्वालिटी है - महाकरुणा की चेतना का विकास। करुणा, अनुकंपा उनके रोम-रोम में बसी थी। जब शिशु गर्भ में आया तब उन्होंने सोचा मेरे हलन-चलन से मेरी माँ को कष्ट होता है। तब प्रभु महावीर ने हिलना डुलना बंद कर दिया। ध्यानयोगी बनकर गर्भ में अवस्थित हो गए। बाह्य जगत में मां की पीड़ा को देखकर महावीर ने पुनः हलन चलन के साथ एक संकल्प लिया- मैं माता-पिता के जीवन काल में संन्यास ग्रहण नहीं करूंगा। यह करुणा के अजस्र स्रोत महावीर के जन्म-जन्मान्तर के पुण्यों का महाप्रमाण था।

दृष्टि विष चंडकौशिक ने भगवान को तीन बार डंक लगाया। उसके सब प्रयत्न विफल हो गए। वह थककर चूर हो गया। भगवान के सामने खिन्न होकर बैठ गया। भगवान ने प्रशान्त और मैत्री से ओतप्रोत दृष्टि उस पर डाली कि उसके रोम-रोम में शांति और सुधा व्याप्त हो गयी। यह है अहिंसा की प्रतिष्ठा और मैत्री की विजय।शूलपाणि यक्ष ने महावीर को कष्ट देने में कोई कसर नहीं छोड़ी। संगम देवता ने एक रात में बीस मारणांतिक कष्ट देकर महावीर को परास्त करना चाहा। आदिवासी लोगों ने भरपूर परिषह उत्पन्न किए पर महावीर की शांति को कोई भंग नहीं कर सके। भगवान अहिंसा के महास्रोत थे। उन्होंने ध्यानयोग, तपोयोग से अपने चित्त को मैत्री भावना से इस कदर भावित कर लिया कि वे संपूर्ण मानव जाति के लिए मैत्री का निर्झर बहाते रहे।

एक अच्छंदक तपस्वी ज्योतिष, वशीकरण, मंत्र-तंत्र आदि विधाओं में कुशल था। मोराक सान्निवेश में उसकी बहुत प्रसिद्धि थी। जनता उसके चमत्कारों से प्रभावित थी। पर वह महावीर की अध्यात्म चेतना के सामने टिक नहीं सका। उसने कहा- भंते! आप सर्वत्र पूज्य हैं। आपका व्यक्तित्व विशाल है। महान् व्यक्तित्व क्षुद्र व्यक्तित्वों को ढांकने के लिए नहीं होते। मुझे आशा है कि भगवान मेरी भावना का सम्मान करेंगे। भगवान की करुणा इतनी विराट थी कि भगवान ने वहां से प्रस्थान कर दिया।

राजकुमारी चन्दनबाला को बंधन मुक्ति की दिशा में प्रस्थित करने के लिए भगवान ने तेरह अभिग्रह स्वीकार किए और दास प्रथा की बेड़ियों को धराशायी कर दिया। यह अनुकंपा की भावना का अदम्य अदाहरण है। नारी के बंध विमोचन से महिला जगत को भगवान ने उज्जवल भविष्य प्रदान किया।

भगवान को कहीं बंदी बनाया गया कहीं वंदना की गयी। सात बार फांसी के फंदे पर लटकाया गया पर भगवान सहज शांति की सरिता में निष्णात होकर विहार कर रहे थे।

अहिंसा के हिमालय पर हिंसा का वज्रपात गोशालक ने किया। पर वह महावीर को विचलित नहीं कर सका। 'अभी सोलह वर्ष तक जीवित रहूंगा', ऐसी थी सार्वभौम वीतरागता की पराकाष्ठा भगवान महावीर की। उन पावन चरणों में रोहिणेय आए, अर्जुनमाली आए, सुदर्शन आए, हरिकेश आए, बड़े-बड़े राजा महाराजा आए, श्रेष्ठी-सामंत आए और महावीर की अनुशासना में आश्वस्त-विश्वस्त हो गए। ईगो प्रॉब्लम, अपसेट मूड, टेंशन ऐसे इंफेक्शन है जिन्हें दूर करने के लिए प्रभु महावीर ने एंटीबायोटिक डोज मेडिसिन के रूप में दी। वह डोज है मेडिटेशन जो नेगेटिव एटीट्यूड को दूर करती है। पॉजिटिव एटीट्यूड को बढ़ाती है। बी कॉन्फिडेंट रहने का गुड सीक्रेट देती है। हर इंसान को वह Good, Great और God बना सकती है।

हम महावीर को पढ़े. जाने और जीने का प्रयास करें।

1. महावीर को जानने के लिए हम अपनी अन्तर्दृष्टि जगाएं।

2. करुणा की अजस्र धार से शम उपशम की मिसाल बन जाए।

3. सद्भावना से नए युग की मशाल बन जाएं।

4. काम ऐसा कर दिखलाए कि बदलते समाज के भाल बन जाएं।

भगवान महावीर जन्म कल्याणक पर विशेष

एक अनसुनी गूँज, एक अनकही सीख

● साध्वी केवलयशा ●

जब भी हम भगवान महावीर का नाम सुनते हैं, आँखों के सामने एक तपस्वी, एक साधक और एक महान त्यागी का चित्र उभरता है। लेकिन क्या यह परिचय पर्याप्त है? क्या महावीर केवल वे थे जिन्होंने राजपाट छोड़ा, कठिन तपस्या की और मोक्ष प्राप्त किया? यदि हाँ, तो फिर उनके विचारों की आज क्या प्रासंगिकता है?

क्या उनका जीवन केवल अतीत की किताबों में दबा हुआ एक अध्याय है, या फिर वर्तमान की धड़कन में एक ध्वनि बनकर जीवित है? आज की पीढ़ी, जो तेज़ रफ्तार, प्रतिस्पर्धा, और मानसिक तनाव से जूझ रही है, क्या महावीर के जीवन से कोई मार्गदर्शन ले सकती है? आइए इस महावीर जयंती पर हम उनके जीवन को एक नई दृष्टि से देखें—एक ऐसी दृष्टि जिससे हर युवा, हर कार्यशील व्यक्ति, और हर जिज्ञासु आत्मा कुछ अद्भुत सीख सके।

१. डर से मुक्ति : 'न भय, न भयभीत'

भगवान महावीर का सबसे बड़ा संदेश था—₹अभय₹। उन्होंने कहा- 'जो दूसरों को डराता है, वह स्वयं सबसे अधिक भयभीत होता है।' आज का समाज असुरक्षा, भय और चिंता से ग्रस्त है। महावीर हमें सिखाते हैं कि वास्तविक ताकत बाहरी प्रदर्शन में नहीं, बल्कि भीतर की निर्भीकता में है। सोचिए, यदि हम बिना किसी भय के जीवन जीना शुरू कर दें—लोग क्या कहेंगे ? असफलता का डर, खोने का भय—तो हम कितने मुक्त हो जाएंगे?

२. अहिंसा का गूढ़ अर्थ : 'मन, वचन और कर्म में अहिंसा'

आज हम अहिंसा को केवल शारीरिक हिंसा से जोड़कर देखते हैं, लेकिन महावीर ने इसे व्यापक अर्थ में समझाया। किसी का अपमान करना, कटु वचन बोलना, क्रोध में आकर दूसरों को चोट पहुँचाना—यह भी हिंसा ही है। सोशल मीडिया पर किसी का मज़ाक उड़ाना, ट्रोल करना, झूठ फैलाना—यह भी हिंसा है। महावीर कहते हैं कि केवल हाथों से नहीं, बल्कि मन और वचन से भी अहिंसा का पालन करना चाहिए। क्या हम इस सत्य को अपने जीवन में उतार सकते हैं?

३. आत्मा की स्वतंत्रता : 'तुम ही अपने भाग्य के विधाता हो'

आज हर कोई अपने भाग्य को कोसता है—'मेरे पास अवसर नहीं थे', 'मेरी परिस्थितियाँ अनुकूल नहीं थीं'। लेकिन महावीर कहते हैं, 'कोई भी बाहरी शक्ति तुम्हें बाँध नहीं सकती, जब तक तुम स्वयं अनुमति न दो।' क्या हम इस सोच को आत्मसात कर सकते हैं? क्या हम अपनी परिस्थितियों को कोसने के बजाय, अपनी आंतरिक शक्ति को पहचान सकते हैं? यदि हाँ, तो फिर कोई भी विपरीत परिस्थिति हमें नहीं रोक सकती।

४. संपत्ति का लोभ नहीं, संतोष की संपत्ति

आज हम भौतिक चीज़ों के पीछे भागते हैं—बड़ी कार, बड़ा घर, बड़ा बैंक बैलेंस। लेकिन क्या हमने कभी यह सोचा कि इन सब चीज़ों के बावजूद शांति क्यों नहीं मिलती? महावीर ने कहा था, 'सच्ची संपत्ति संतोष है।' क्या यह सीख आज के जीवन में सबसे अधिक प्रासंगिक नहीं है? जितना अधिक हम बाहरी चीज़ों में सुख खोजेंगे, उतना ही अधूरे रहेंगे। वास्तविक सुख भीतर से आता है, और यही महावीर की सिखाई गई सबसे महत्वपूर्ण कला है।

५. रिश्तों का असली अर्थ : 'स्वयं को जानो, फिर दूसरों को समझो'

रिश्तों में तनाव क्यों बढ़ रहा है? क्योंकि हम दूसरों को बदलना चाहते हैं, लेकिन स्वयं को समझने का प्रयास नहीं करते। महावीर कहते हैं, 'पहले खुद को जानो, फिर दुनिया तुम्हारे लिए बदल जाएगी।'

अगर हम इस एक बात को समझ लें, तो हर रिश्ता, हर संबंध मधुर हो सकता है। क्या हम इसे अपनाने के लिए तैयार हैं?

६. धैर्य और सहनशीलता : 'हर चीज़ का समय आता है'

आज की दुनिया 'इंस्टेंट ग्रेटिफिकेशन' चाहती है—सबकुछ तुरंत! लेकिन महावीर कहते हैं, 'जो अपने धैर्य को खोता है, वह अपनी सबसे बड़ी शक्ति को खो देता है।' सोचिए, अगर हम थोड़े और धैर्यवान हो जाएँ, तो कितने बड़े परिवर्तन संभव हो सकते हैं?

७. आध्यात्मिक जागरूकता : 'आत्मा को जानो, तभी सत्य को समझोगे'

महावीर कहते हैं, ₹जो आत्मा को जानता है, वही सत्य को समझ सकता है।₹ आज की दुनिया में आत्मिक शांति की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है। लोग बाहर की दुनिया को बदलने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन महावीर हमें भीतर की यात्रा पर ले जाने का मार्ग दिखाते हैं। यदि हम आत्मा को समझ लें, तो बाहरी संसार की हर समस्या छोटी लगने लगेगी।

८. पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता

भगवान महावीर ने केवल मनुष्यों के प्रति नहीं, बल्कि प्रकृति और पशु-पक्षियों के प्रति भी करुणा का संदेश दिया। आज जब दुनिया जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग और प्राकृतिक संसाधनों की कमी से जूझ रही है, महावीर का ₹संयम से जियो और जीने दो₹ का सिद्धांत और अधिक प्रासंगिक हो जाता है। क्या हम इस सीख को अपनाकर एक अधिक संवेदनशील और संतुलित जीवन जी सकते हैं?

महावीर का संदेश: अब या कभी नहीं!

महावीर के उपदेश केवल अतीत की बातें नहीं, बल्कि भविष्य की रोशनी हैं। यह हमारे हाथ में है कि हम इसे केवल प्रवचन समझें या फिर अपने जीवन का अमूल्य सत्य।

यदि तनाव से मुक्त होना है, तो अहिंसा और संतोष को अपनाएँ।

यदि आत्मविश्वास चाहिए, तो निर्भीक बनें।

यदि मानसिक शांति चाहिए, तो स्वयं को पहचानें।

यदि रिश्तों में प्रेम चाहिए, तो दूसरों को समझने का प्रयास करें।

अंतिम प्रश्न: क्या हम महावीर को जी सकते हैं?

महावीर जयंती पर मिष्ठान बांटने और शोभायात्रा निकालने से अधिक महत्वपूर्ण यह है कि हम उनके विचारों को अपने जीवन में उतारें। क्या हम इस महावीर जयंती से एक संकल्प ले सकते हैं कि उनके विचारों को मात्र ग्रंथों में नहीं, बल्कि अपने जीवन में जिएँगे?

यह लेख सिर्फ पढ़ने के लिए नहीं, बल्कि आत्मसात करने के लिए है। और यदि एक भी विचार आपको अंदर से झकझोर दे, तो समझ लीजिए कि महावीर आज भी जीवित हैं—हमारे भीतर, हमारी आत्मा मे।

तुम पारदर्शी समत्वदर्शी थे

● साध्वी मुक्ताप्रभा ●

महावीर तुम केवल महावीर ही थे, तुम्हें न श्रेय की चिंता न प्रेय की,
बस जिज्ञासा, निरञ्जन निराकार बनने की,
तुम न राग को जानते न द्वेष को,
बस वीतराग पद को पाना चाहते थे,
जहां न राग है, न शोक, न भोग,
और न जन्म, न मरण, न बुढ़ापा,
न आधि, न व्याधि, केवल समाधि,
तुम वंदनीय थे, तुम पूजनीय थे,
जीवन दर्शन के साक्षात अक्षय स्रोत थे,
तुम पारदर्शी थे तुम समत्वदर्शी और,
थे आत्मदर्शी सर्वज्ञदर्शी,
ज्ञानदर्शन के परमऋषि थे।
महावीर तुम केवल महावीर ही नहीं थे,

तुम जन-जन के पीर थे,
मानवता की तकदीर थे,
जैन जगत की नजीर थे,
साम्यवाद की तस्वीर थे,
समस्या समाधान के सूत्रधार थे,
आगम ग्रंथों के प्रवक्ता थे,
अनेकांत के उद्गाता, स्याद्वाद के प्रदाता थे,
अहिंसा के प्रयोग धर्मा थे।

पूनिया को बांटा सत्यं शिवं सुन्दरं आलोक,
और बांटी मैत्री करुणा की अमृतधार,
करती है प्रज्ञा की रश्मि,
प्रणाम - प्रणाम - प्रणाम।

जन्मोत्सव प्रभु महावीर का

● साध्वी कुमुदप्रभा ●

जन्मोत्सव प्रभु महावीर का नभ धरती हरसाए।
सिद्धारथ कुल उजियारे को श्रद्धा शीष झुकाएं।
अमर आलोक अभिनंदन।।

चौदह स्वप्न देख माता त्रिशला का मन हरसाया,
ज्योतिर्मय नंदन का नाम वर्धमान कहलाया।
त्रिभुवन के वे नाथ त्रिलोकी देव दुंदुभि बजाए।।

असंविभागी न हु तस्स मोक्खो का सिद्धांत दिराया,
आग्रह विग्रह को दूर घटाएं अनेकांत मन भाया।
अहिंसा के राजपथ पर मैत्री दरिया बहाएं।।

संयम तप के तपोवन में ध्यान का दीप जलाया,
उपसर्गों की आंधियों में समता शंख बजाया।
शांति का संदेश पावन जीवन सफल बनाएं।।

अभयदान दिया जीवों को करुणा सागर प्रभु ने,
अन्तर्यामी बने हम सब मंत्र दिया महाविभु ने।
महासूर्य अजर अविनाशी चेतना चमकाएं।।

कांतमणि केवलज्ञानी को शत-शत नमन हमारा,
चंदनबाला, चंडकौशिक को तेजपुंज ने तारा।
चौबीसवें जिनमाण के शासन में नैय्या पार लगाएं।।

लय - माइन माइन

संबोधि

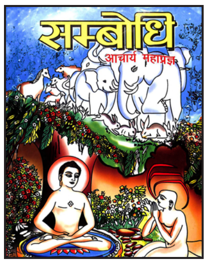

गृहिधर्मचर्या

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

४९. सम्यग्दर्शनमापन्नाः, अनिदाना अहिंसकाः।
म्रियते प्राणिनस्तेषां, सुलभा बोधिरिष्यते॥

जो सम्यग्दर्शन से युक्त हैं, जो भौतिक सुख का संकल्प नहीं करते और जो अहिंसक हैं, उन्हें मृत्यु के उपरान्त बोधि सुलभ होती है।

जीवन का परम ध्येय बोधि है। बोधि के अनुभव के अभाव में संसार-प्रवाह प्रक्षीण नहीं होता। जीसस ने कहा है-'पहले प्रभु का राज्य प्राप्त कर ले। शेष सब अपने आप मिल जाएगा।' अपने को पा लेने के बाद व्यक्ति को और क्या चाहिए? सभी चाह मिट जाती हैं। वह स्वयं सम्राट् हो जाता है।

'चाह मिटी चिंता मिटी, मनवा बेपरवाह।
जिसको कुछ नहीं चाहिए सो शाहन को शाह।।'

बोधि का न मिलना ही दरिद्रता है। सच्ची संपत्ति वही है जो हमारे साथ जा सके। किन्तु जो केवल बाहर से ही समृद्ध होना चाहते हैं, वे असली सम्पत्ति से चूक जाते हैं। जिनकी दृष्टि सम्यग् नहीं है, विचार पवित्र नहीं है, ऐसे व्यक्तियों को बोधि अगले जन्म में भी दुर्लभ है।

लेकिन जो बाहर से हटकर भीतर की यात्रा में चल पड़ते हैं, बाहर के सुखों में आसक्त नहीं होते और न उसके लिए प्रयत्नशील रहते हैं उनका समस्त श्रम स्वयं की खोज में होता है। ऐसे व्यक्ति बोधि से वंचित नहीं रहते।

५०. अपापं हृदयं यस्य, जिह्वा मधुरभाषिणी।
उच्यते विषकुम्भः स, नूनं मधुपिधानकः॥

जिस व्यक्ति का हृदय पाप-रहित है और जिसकी जिह्वा मधुरभाषिणी है, वह विषकुंभ है और मधु के ढक्कन से ढंका हुआ है।

५१. अपापं हृदयं यस्य, जिह्वा कटुकभाषिणी।
उच्यते मधुकुम्भः स, नूनं विषपिधानकः।।

जिस व्यक्ति का हृदय पाप-रहित है, किन्तु जिसकी जिह्वा कटुक-भाषिणी है, वह मधुकुम्भ है और विष के ढक्कन से ढंका हुआ है।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्यश्री भारमल जी युग

साध्वीश्री नंदूजी (लावा सरदारगढ़) दीक्षा क्रमांक 92

साध्वीश्री बड़ी साहसिक और विदुषी थी। साधुक्रिया में तन्मय और गुरु आज्ञा का बड़ी जागरुकता से पालन करने वाली थी। साध्वीश्री ने तपस्या बहुत की तथा शीतकाल में शीत सहन किया। आपके साथ रहने वाली साध्वियों ने भी अनेक तपस्याएं कर संघ की गौरव वृद्धि की।

– साभार: शासन समुद्र –

श्रमण महावीर

संघ - व्यवस्था

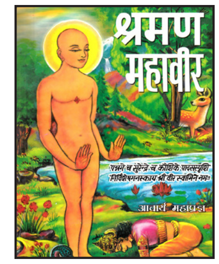

भगवान् ने मुनि को अपरिग्रही जीवन बिताने का निर्देश दिया। परिग्रह के दो अर्थ हैं-वस्तु और मूर्च्छा। वस्तु का परिग्रह होना या न होना मूर्च्छा पर निर्भर है। मूर्च्छा के होने पर वस्तु परिग्रह बन जाती है और मूर्च्छा के अभाव में वह अपरिग्रह बन जाती है।

परिग्रह के मुख्य प्रकार दो हैं-शरीर और वस्तु। शरीर को छोड़ा नहीं जा सकता। उसके प्रति होने वाली मूर्च्छा को छोड़ा जा सकता है। वस्तु को सर्वथा छोड़ा नहीं जा सकता। उसके प्रति होने वाली मूर्च्छा को छोड़ा जा सकता है। वस्त्र जैसे वस्तु है, वैसे भोजन भी वस्तु हैं। वस्त्र और भोजन चैतन्य की मूर्च्छा के हेतु न बनें, यह सोचकर भगवान् ने कुछ व्यवस्थाएं दीं-

१. जो मुनि जित-लज्ज और जित-परीषह हों वे विवस्त्र रहें। वे पात्र न रखें।

२. जो मुनि जित-लज्ज और जित-परीषह न हों वे एक वस्त्र और एक पात्र रखें।

३. जो मुनि एक वस्त्र से काम नहीं चला सकें वे दो वस्त्र और एक पात्र रखें।

४. जो मुनि दो वस्त्र से काम न चला सकें वे तीन वस्त्र और एक पात्र रखें।

५. जो मुनि लज्जा को जीतने में समर्थ हों किन्तु सर्दी को सहने में समर्थ न हों वे ग्रीष्म ऋतु के आने पर विवस्त्र हो जाएं।

६. वस्त्र रखने वाले मुनि रंगीन और मूल्यवान वस्त्र न रखें।

७. मुनि के निमित्त बनाया या खरीदा हुआ वस्त्र न लें।

दिगम्बर परम्परा आज भी वस्त्र न रखने के पक्ष में है। श्वेताम्बर परम्परा वस्त्र रखने के पक्ष में है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि श्वेताम्बर परम्परा में उत्तरोत्तर वस्त्रों और पात्रों की संख्या में वृद्धि हुई है।

भोजन और विहार

भोजन के विषय में विधान यह था-

१. मुनि रात को न खाए।

२. सामान्यतया दिन में बारह बजे के पश्चात् एक बार खाए।

३. यदि अधिक बार खाए तो पहले पहर में लाया हुआ भोजन चौथे पहर में न खाये।

४. बत्तीस कौर से अधिक न खाए।

५. मादक और प्रणीत वस्तुएं न खाए।

६. माधुकरी-चर्या द्वारा प्राप्त भोजन ले, अपने निमित्त बना हुआ भोजन स्वीकार न करे।

७. लाकर दिया हुआ भोजन स्वीकार न करे।

भगवान् पार्श्व के शिष्यों के लिए परिव्रजन की कोई मर्यादा नहीं थी। वे एक गांव में चाहे जितने समय तक रह सकते थे। भगवान् महावीर ने इसमें परिवर्तन कर नवकल्पी विहार की व्यवस्था की। उसके अनुसार मुनि वर्षावास में एक गांव में रह सकता है। शेष आठ महीनों में एक गांव में एक माह से अधिक नहीं रह सकता।

पात्र

भगवान् महावीर दीक्षित हुए तब उनके पास कोई पात्र नहीं था। भगवान् ने पहला भोजन गृहस्थ के पात्र में किया। भगवान् ने सोचा-यह पात्र कोई माजेगा, धोएगा। यह समारम्भ किसके लिए होगा? मेरे लिए दूसरे को यह क्यों करना पड़े? उन्होंने पात्र में भोजन करना छोड़ दिया।

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

समता का अनुष्ठान : सामायिक

स्वामीजी ने कहा–'सामायिक में समताभाव ही रखना चाहिए। शुद्ध सामायिक की तुलना में दो हजार रुपयों का कोई मूल्य नहीं है। स्वामीजी के इन शब्दों से पटवाजी का आत्मविश्वास जागा और वे अपने मन को स्थिर करते हुए सोचने लगे–मेरे भोग में आने की वस्तु होगी तो कहीं जाएगी नहीं, और यदि जाने वाली ही होगी तो हजार सुरक्षा करने पर भी रहेगी नहीं तो फिर मुझे सामायिक में अस्थिरता क्यों लानी चाहिए। उन्होंने इस प्रकार अपने मन को सुस्थिर कर लिया।

सामायिक का काल पूर्ण होने पर पटवाजी दुकान पर गए तो यह देखकर आश्चर्य चकित हो गए कि एक बकरा उस थैले से सटकर इस प्रकार बैठा है मानो किसी दुष्ट व्यक्ति की दृष्टि से उसे बचाना ही उसका उद्देश्य हो।

प्रतिदिन सामायिक हो, यह काम्य है किन्तु किन्हीं कारणों से ऐसा संभव न हो सके तो प्रति सप्ताह एक सामायिक का अभ्यास भी नियमित रूपेण चलता रहे, तो भी जीवन का एक अच्छा क्रम बन सकता है। सामायिक स्वयं करना तो लाभदायी है ही, दूसरों को सामायिक करने की प्रेरणा देना उसके लिए तैयार करना भी अपने लिए और जिनको सामायिक की प्रेरणा दी जाती है, उनके लिए-दोनों के लिए लाभदायी होता है। सामायिक में जीवन्तता तभी आ सकती है, जब व्यक्ति सामायिक के अनुष्ठान को समझ लेता है और विवेक तथा निष्ठा के साथ उस अनुष्ठान में दत्तचित्त बनता है, तदुपयुक्त बनता है।

नव तत्त्वों में सामायिक संवर तत्त्व है। उस काल में जो स्वाध्याय आदि धार्मिक प्रवृत्ति की जाती है वह अपने आपमें निर्जरा है। यों सामायिक संवर और निर्जरा दोनों का संगम स्थल बन सकती है और जहां संवर–निर्जरा की साधना होती है, वहां आत्मा की शुद्धि अवश्य होती है, तनाव मुक्त क्षणों में जीने का अवसर भी सामायिक में प्राप्त हो सकता है। अपेक्षा है न केवल वृद्ध व्यक्ति अपितु युवा पीढ़ी के भाई–बहिन भी सामायिक के महत्त्व का अंकन करें और अपने जीवन में उसको स्थान दें, उसका नियमित अभ्यास करें।

दुःख का कारण : राग

जम्मं दुक्खं जरा दुक्खं रोगा य मरणाणि य।
अहो दुक्खो हु संसारो जत्थ कीसंति जंतवो।।

जन्म दुःख है, बुढ़ापा दुःख है, रोग दुःख है, मृत्यु दुःख है। आश्चर्य है संपूर्ण संसार दुःखमय है। अगर दुनिया में दुःख नहीं होता तो धर्म या अध्यात्म का कोई मूल्य नहीं होता। दुःख से निवृत्त होने के लिए ही व्यक्ति धर्म या अध्यात्म का सहारा लेता है।

भगवान महावीर ने कहा–

जरा जाव न पीलेइ, वाही जाव न वड्ढई।
जाविन्दिया न हायंति ताव धम्मं समायरे ।।

जब तक बुढ़ापा पीड़ित न करे, रोगों का जोर न बढ़े, इन्द्रियां क्षीण न हों, तब तक व्यक्ति को धर्म का आचरण करना चाहिए।

क्योंकि बुढ़ापा आ जाने पर, रोगों के बढ़ने पर, इन्द्रियों के क्षीण हो जाने पर, स्वाध्याय, ध्यान, तपस्या तथा साधना में बाधा उपस्थित हो जाती है। इसलिए शरीर अक्षम बनने से पूर्व ही विशेष साधना करने का विधान किया गया। कुछ लोग यह भी सोचते हैं कि अभी क्या है धर्म तो बाद में ही कर लेंगे। कौन-सी अभी मृत्यु आने वाली है? उत्तराध्यन सूत्र के चौदहवें अध्ययन में भृगुपुत्र एवं माता-पिता का संवाद दिया गया है।

माता–पिता भृगुपुत्रों से कहते हैं। तुम अभी बालक हो, दीक्षा का चिन्तन बाद में कर लेना। भृगुपुत्रों ने कहा माता–पिता! तीन प्रकार के लोग बाद में धर्म करने की बात सोच सकते हैं।

(क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com पर ई-मेल अथवा
8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

अप्रैल 2025
सप्ताह के विशेष दिन

13 अप्रैल भगवान कुन्थुनाथ निर्वाण कल्याणक	**15 अप्रैल** भगवान शीतलनाथ निर्वाण कल्याणक
18 अप्रैल भगवान कुन्थुनाथ दीक्षा कल्याणक	**19 अप्रैल** भगवान शीतलनाथ च्यवन कल्याणक

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री डालमचन्दजी युग

मुनिश्री बच्छराजजी (मोखणुंदा) दीक्षा क्रमांक 343

मुनिश्री विनयी, ऋजु, आचार विचार में निर्मल, रीति–नीते में सावधान और पाप भीरू थे। त्याग–विराग और तपस्या की त्रिवेणी में सतत निमग्न रहते। आपके तप की तालिका निम्न प्रकार है– उपवास/2613, 2/286, 3/41, 4/26, 5/16, 6/2, 8/2 कुल दिन 3520 जिनके 9 वर्ष 9 महीने 10 दिन हुए। अन्त में 43 दिन संलेखना तप, 6 दिन तिविहार अनशन तथा 3 दिन चौविहार अनशन से स्वर्गवास हुआ।

– साभार: शासन समुद्र –

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
07 अप्रैल - 13 अप्रैल, 2025

संक्षिप्त खबर

वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन

इचलकरंजी। अभातेममं के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल इचलकरंजी द्वारा वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन स्थानीय स्तर पर किया गया। आधुनिक जीवन शैली और पारंपरिक संस्कार सहअस्तित्व या संघर्ष कार्यक्रम का शुभारंभ नवकार मंत्र व प्रेरणा गीत से महिला मंडल द्वारा हुआ। मंडल की अध्यक्ष शिल्पा बाफना ने अपना वक्तव्य देते हुए सभी का स्वागत किया। मुख्य अतिथि और कार्यक्रम में निर्णायक की भूमिका डॉक्टर सुमन पाटनी ने निभाई। इस प्रतियोगिता में 8 महिलाओं ने भाग लिया था। पहला स्थान डिंपल भंसाली, दूसरा स्थान रजनी पारख और तीसरा स्थान सुनीता गिडिया को प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल के मंत्री मीना भंसाली ने किया। आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष सपना बालड ने किया। 35 बहनों ने इस कार्यशाला में भाग लिया।

शिवकासी। तेरापंथ महिला मंडल शिवकाशी के निर्देशानुसार वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन अध्यक्ष रानी बरडिया के निवास स्थान पर रखा गया। आधुनिक जीवन शैली और पारिवारिक संस्कार सह अस्तित्व या संघर्ष विषय पर आयोजित प्रतियोगिता का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ। प्रेरणा गीत का संगान वरिष्ठ श्राविका सम्पत डागा ने किया। मंत्री बेला कोठारी ने सबका स्वागत व कार्यक्रम का संचालन किया। सभी प्रतियोगी बहनों ने अपने पक्ष और विपक्ष दोनों मुद्दे पर विचार रखे। प्रथम स्थान पर अध्यक्ष रानी बरडिया रही। आभार ज्ञापन प्रेम बैद ने किया।

अंतराष्ट्रीय महिला दिवस पर विशेष छूट

रायपुर। तेरापंथ युवक परिषद्, रायपुर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, रायपुर द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर त्रिदिवसीय में 7 टेस्ट निर्धारित लैब मूल्य से छूट प्रदान करते हुए प्रस्तुत किये गए। कुल 82 टेस्ट हुए जिसका लाभ 30 व्यक्तियों द्वारा लिया गया।

महासभा निर्देशित आयामों की दी जानकारी

इरोड। स्थानीय तेरापंथ भवन में तेरापंथ महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया का आगमन हुआ। सभा अध्यक्ष जवेरीलाल भंसाली ने सभी का स्वागत किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने आध्यात्मिक, संघीय गतिविधियों, महासभा निर्देशित आयामों के बारे में जानकारी प्रदान की। छोटी खाटू में आयोजित होने वाले आगामी मर्यादा महोत्सव में सभी को आमन्त्रित किया। महासभा उपाध्यक्ष नरेन्द्र नखत, कार्यसमिति सदस्य सुरेन्द्र भंडारी एवं ताराचंद धारीवाल ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में तेरापंथ सभा, महिला मण्डल, एवं युवक परिषद् के सदस्यों की उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन मंत्री दुलीचंद पारख ने व्यक्त किया।

प्रेरणा सम्मान पुरस्कार का आयोजन

कोयंबटूर। अभातेममं के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल, कोयंबटूर ने एक कार्यशाला का आयोजन किया जिसके अंतर्गत हिंदी काव्य व साहित्य लेखिका डॉ पद्मावती का सम्मान किया गया। इस कार्यशाला की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के द्वारा की गई। स्थानीय मंडल अध्यक्ष मंजू सेठिया ने सबका स्वागत किया। मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत का संगान किया। डॉ पद्मावती का परिचय आकांक्षा पुगलिया ने दिया। डॉ पद्मावती ने नारी शक्ति के बारे में बताते हुए काव्य पाठ भी किया। मंडल की बहनों की अच्छी उपस्थिति रही। धन्यवाद ज्ञापन मंत्री सुमन सुराना ने दिया। कार्यक्रम का कुशल संचालन निधि घोषाल ने किया।

प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन

हैदराबाद।

तेरापंथ युवक परिषद, हैदराबाद और तेरापंथ महिला मंडल, हैदराबाद के संयुक्त तत्वावधान में प्रेक्षा कल्याण वर्ष के उपलक्ष्य में 'आओ जीना सीखें' नामक दो दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन तेरापंथ भवन, बोलारम में किया गया। शिविर में साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में ध्यान का अभ्यास किया गया। प्रेक्षा वाहिनी की मुख्य संयोजिका रीटा सुराना ने कार्यक्रम का संचालन किया। उन्होंने शिविर के उद्देश्यों और गतिविधियों के बारे में जानकारी दी।

शिविर का शुभारंभ तेयुप अध्यक्ष अभिनंदन नाहटा के स्वागत भाषण से हुआ। उन्होंने सभी आगंतुकों का स्वागत करते हुए प्रेक्षाध्यान के महत्व पर प्रकाश डाला। प्रेक्षा प्रशिक्षक नविता नाहटा ने उपस्थित साधकों को ध्यान प्रयोग कराया, जिससे सभी ने शांति और एकाग्रता का अनुभव किया।

साध्वी मयंकप्रभाजी और साध्वी मेरुप्रभाजी ने अपने वक्तव्य के माध्यम से जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण और आध्यात्मिक विकास के महत्त्व पर जोर दिया।

साध्वी डॉ गवेषणाश्री जी ने प्रेक्षाध्यान का विशेष प्रयोग करवाया। साध्वीश्री ने ध्यान और योग के प्रयोग से संतुलित और स्वस्थ जीवन जीने के तरीके बताए। उन्होंने कायोत्सर्ग, महाप्राण ध्वनि और अन्य प्रयोगों के लाभ के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी।

तेरापंथ महिला मंडल मंत्री सुशीला मोदी ने सभी का आभार व्यक्त किया। शिविर में अच्छी संख्या में साधकों ने भाग लिया। प्रेक्षा वाहिनी सुचित्रा का भी इस आयोजन में सहयोग रहा।

कार्यक्रम के संयोजक रीटा सुराना, शकुंतला बुच्चा और नीरज सुराना रहे।

स्वरधारा व प्रेरणा सम्मान का आयोजन

आर आर नगर।

तेरापंथ महिला मंडल द्वारा तेरापंथ सभा भवन में स्वरधारा व प्रेरणा सम्मान का आयोजन साध्वी पावनप्रभाजी के सान्निध्य में किया गया। साध्वीश्री ने नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की।

सर्वप्रथम महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया। उपाध्यक्ष मंजू बोथरा ने अपने स्वागत वक्तव्य में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की सभी को बधाई दी। प्

रतियोगिता में 12 बहनों ने नारी शक्ति पर आधारित सुन्दर कविता के माध्यम से प्रस्तुति की। जिसमें वंदना भंसाली प्रथम, पूनम दुग्गड द्वितीय और रुचिका पटावरी तृतीय स्थान पर रहीं। इसके अतिरिक्त प्रेरणा गीत की काव्य पाठ रूपी प्रस्तुति हेतु ऑनलाइन

मां जन्म देने वाली होने के साथ ही घर की लक्ष्मी, सरस्वती है।

प्रतियोगिता में 7 बहनों ने वीडियो बनाकर भेजें, जिनमें ममता सिंघवी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। कन्या मंडल द्वारा नारी पर सुंदर प्रस्तुति दी गई।

साध्वी पावनप्रभा जी ने कहा महिला घर का आधारशिला है। मां जन्म देने वाली होने के साथ ही घर की लक्ष्मी, सरस्वती है। वह ऐसे घर का निर्माण करती है जिसमें प्यार की छत, विश्वास की दीवार, सहयोग के दरवाजे और अनुशासन की खिड़कियां होती हैं। महिला समाज व परिवार को भी संपोषित करती हैं। उन्होंने महिला दिवस के उपलक्ष में विशेष रूप से सभी को संयमनिष्ठ व श्रमनिष्ठ बनने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में बिंदु रायसोनी को प्रेरणा सम्मान पत्र से सम्मानित किया गया। उनका परिचय आशा लोढ़ा ने तथा प्रेरणा पत्र का वाचन विजय लक्ष्मी मुणोत ने किया। बिंदु रायसोनी ने अपने वक्तव्य में कहा कि महिलाएं आज भी अपना सहअस्तित्व खोज रही हैं और हर जगह संघर्ष कर रही है। सभा की उपाध्यक्ष सरोज आर. बैद ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

आरआर नगर महिला मंडल हर दम उन्नति की ओर अग्रसर रहे। प्रतियोगिता की निर्णायक सरोज बोथरा एवं दीप्ति गौरव गुप्ता ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

सभी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। संचालन कार्यक्रम की संयोजिका एवं सह-संयोजिका मधु कटारिया एवं पूनम दक ने किया। आभार मंत्री पदमा महेर ने किया।

योग और ध्यान से बढ़ाए रोग प्रतिरोधक क्षमता

जसोल।

अभातेममं के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल जसोल द्वारा 'मेडिटेट टू बूस्ट योर इम्युनिटी' कार्यशाला का आयोजन किया गया। सामूहिक नमस्कार महामंत्र से कार्यशाला की शुरुआत की गई। मंगलाचरण में नीतू सालेचा ने 9 मंगल भावनाओं का शुद्ध उच्चारण के साथ प्रयोग करवाया। अध्यक्ष कंचनदेवी ढेलडिया ने स्वागत वक्तव्य दिया।

मंत्री अरुणा डोसी ने बताया कि ममता गोलेच्छा ने सभी बहनों को इम्युनिटी बढ़ाने के लिए भुजंगासन, वज्रासन, पर्वतासन, प्राण मुद्रा जैसे प्रयोग करवाए और लाभ भी बताए। मीना ओस्तवाल ने बताया कि तन और मन को स्वस्थ रखने के लिए ध्यान और योग अच्छे साधन हैं। ध्यान से मानसिक और भावनात्मक और योग से शारीरिक स्वस्थता को बढ़ा सकते हैं। उपासिका मोहनी देवी सकलेचा ने महाप्राण ध्वनि का प्रयोग करवाया। आभार ज्ञापन जयश्री सालेचा ने तथा कार्यक्रम का सफल संचालन पूर्व अध्यक्ष मंजू भंसाली ने किया।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विविध आयोजन

नालासोपारा, मुंबई

नालासोपारा, मुंबई। अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित 'प्रेक्षाप्रवाह शांति एवं शक्ति की भोर' विषयक कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल, नालासोपारा द्वारा किया गया। कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए प्रोफेसर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा- भगवान महावीर का दर्शन स्वास्थ्य का दर्शन है। भगवान महावीर की विलुप्त साधना पद्धति को आचार्य श्री तुलसी एवं आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने पुनर्जागृत किया। जैनागमों में निहित अनेक ध्यान सूत्रों का अन्वेषन किया, विभिन्न प्रयोग किए, प्रलम्ब साधना के फलस्वरूप मानवजाति को प्रेक्षाध्यान दिया। साध्वी प्रो.मंगलप्रज्ञा जी ने आगे कहा- प्रेक्षाध्यान में व्यक्तिव परिवर्तन, भावना परिवर्तन के अनेक प्रयोग हैं। दीर्घ श्वास प्रेक्षा, चैतन्यकेन्द्र प्रेक्षा आदि से रोग प्रतिरोधात्मक शक्ति का विकास संभव है। महिला सशक्तिकरण में भी प्रेक्षाध्यान महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है। आज की तनावग्रस्त जीवन शैली को प्रशस्त बनाने के लिए प्रेक्षाध्यान साधना पद्धति है, जरूरत है इस साधना को जीवनचर्या का अंग बनाया जाए। महिला मंडल की बहनों ने प्रेक्षा गीत का संगान किया। तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा मानसी मेहता ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। डॉ. साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने कहा- ध्यान की शैली अनेक समस्याओं का समाधान है। विश्वास और श्रद्धा के साथ की गई साधना फलवान बनती है।

डॉ. साध्वी शौर्यप्रभा जी ने आसन, ध्यान मुद्रा आदि के प्रयोग करवाए। साध्वी सुदर्शनप्रभा जी ने मंगल-भावना करवाई। कार्यक्रम का संचालन साध्वी डॉ. शौर्यप्रभा जी ने किया। मंत्री प्रवीणा खाब्या ने आभार ज्ञापन किया।

साउथ कोलकता

मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में अभातेममं के निर्देशानुसार अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर 'नारीत्व का उत्सव - स्वरधारा' व प्रेरणा सम्मान कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ भवन दक्षिण कलकत्ता में तेरापंथ महिला मंडल दक्षिण कोलकाता द्वारा किया गया, जिसमें कोलकाता क्षेत्र के अन्य महिला मंडल के सदस्य भी उपस्थित थे। मुनि जिनेश कुमार जी ने अपने वक्तव्य में विश्व में नारी समाज के योगदान के बारे में बताते हुए कहा की नारी समाज के उत्थान के पीछे एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत को संगान किया। इस अवसर पर उपस्थित मुख्य वक्ता संस्कृति भंडारी ने नारी के लक्ष्मी, दुर्गा व सरस्वती के नये रूप की व्याख्या करते हुए कहा- आज दिन महिलाओं के आत्म-चिंतन व मनन का दिन है। हमारे भीतर संतोष, कषाय को नियंत्रित करने की शक्ति व परिवर्तन की शक्ति होनी चाहिए। कार्यक्रम का शुभारंभ बृहत्तर कोलकाता की तेरापंथ महिला मंडलों की सदस्यों द्वारा प्रेरणागीत के संगान से हुआ। स्वागत भाषण-तेरापंथ महिला मंडल साउथ कोलकाता की अध्यक्षा पद्मा कोचर ने दिया। नारी सम्मान गीत का संगान साउथ कोलकाता तेरापंथ महिला मंडल द्वारा किया गया। इस अवसर पर नारी सशक्तिकरण पर प्रस्तुति के क्रम में आशा जैन, सरिता कोठारी, अनिता सरावगी, मधु मनोत, हिम्मत चोरड़िया, मंजु चोरड़िया, बबीता भरूट, मालीदेवी संचेती, रेखा कोठारी, रश्मि सुराणा ने भावपूर्ण कविताएं प्रस्तुत की। कार्यक्रम के प्रथम चरण का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया। कार्यक्रम का द्वितीय चरण प्रेरणा सम्मान के रूप में आयोजित हुआ। जिसमें प्रेरणादायी बहनों का सम्मान परिचय प्रस्तुति के साथ किया गया। परिचय प्रस्तुति के क्रम में साउथ कोलकाता की अभातेममं की कार्यकारिणी सदस्य व बंगाल प्रभारी संगीता बाफणा, बेहाला की मंत्री महिमा कोठारी, उत्तर हावड़ा की सारिका राखेचा, रिसड़ा की सरिता बरड़िया, साउथ हावड़ा की अध्यक्षा चन्द्रकांता पुगलिया, हिंदमोटर की अध्यक्षा विनीता मालू, मध्य उत्तर कोलकाता की अध्यक्षा संतोष बैद, टॉलीगंज की अध्यक्ष स्नेहलता पुगलिया ने अपने विचार व्यक्त किये। प्रेरणा सम्मान सत्र का संचालन व आभार मंत्री अनुपमा नाहटा ने किया। इस अवसर पर अभातेममं की संरक्षिका नारी रत्न तारा देवी सुराणा, ट्रस्टी डॉ. सूरज बरडिया, कल्पना बैद, ज्योति जैन, चंपा देवी कोठारी, डॉ. प्रतिभा कोठारी, डॉ. पुखराज सेठिया, परामर्शकगण, पदाधिकारी गण, कार्यसमिति की बहनें विशेष रूप से उपस्थित थी।

राजाजीनगर

राजाजीनगर। तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एण्ड डेंटल केयर श्रीरामपुरम में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष में महिलाओं हेतु अष्ट दिवसीय फिट वूमेन सप्ताह- एटीडीसी क्वींस प्रोफाइल रियायती दर पर महिलाओं हेतु स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया, जिसके अंतर्गत संपूर्ण रक्त जांच, थाइरोइड प्रोफाइल, कोलेस्ट्रॉल, कैल्शियम, मधुमेह, आयरन जैसे विभिन्न 44 रक्त जांच समावेश किए गए। वूमेन सप्ताह के तहत 42 महिलाओं ने स्वास्थ्य जांच करवाई एवं अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष में रियायती दर पर थाइरॉएड फंक्शन टेस्ट का 32 महिलाओं ने लाभ लिया, कुल 74 महिलाएं लाभान्वित हुई। शिविर हेतु हंसराज, अशोककुमार चौधरी परिवार का अर्थ सहयोग प्राप्त हुआ।

चेन्नई

अभातेममं के तत्वावधान में तेरापंथ महिला मंडल चेन्नई द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर नारीत्व का उत्सव - स्वर धारा (कवि सम्मेलन) एवं प्रेरणा सम्मान समारोह तेरापंथ भवन, साहूकारपेट में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के पश्चात प्रेरणा गीत के मंगलाचरण के साथ हुई। अध्यक्षा लता पारीख की शुभेच्छा के साथ उपाध्यक्षा रीमा सिंघवी ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किया। वर्ष 2024-25 का प्रेरणा सम्मान सुनीता यशपाल गुलेच्छा को प्रदान किया गया। जैन दर्शन को समृद्ध बनाने एवं समाज में उनके प्रचार-प्रसार में आपका अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है। महिला मंडल पदाधिकारी, अभातेममं कार्यसमिति सदस्या माला कातरेला, दीपा पारीख ने सुनीता यशपाल को प्रेरणा सम्मान के रुप में प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया। सुनीता ने इस सम्मान के लिए महिला मण्डल को साधुवाद देते हुए महिला शक्ति को जैनिज़्म, साइकोलॉजी और फाइनेंस के साथ में व्यक्तित्व विकास पर अपने प्रभावी वक्तव्य से उत्प्रेरित किया। इस अवसर पर स्वर धारा कवि सम्मेलन में कवयित्री आकांक्षा बरनवाल, सरिता सरगम, मोहिनी चौरडिया, वनिता पगारिया, डा. मंजु रुस्तगी, पमिता खीचा, शिल्पा जैन, ज्योति मेहता, दिव्या दिवेदी ने वीर, हास्य, व्यंग्य, नारी सृजन पर सुंदर कविता पाठ के साथ अपने भावों से सभा में जोश भरा। अनेकों महिला मण्डल सदस्याओं ने कवियत्रीगणों के परिचय के साथ अपने-अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर सैकड़ों महिलाओं के साथ तेरापंथ ट्रस्ट के प्रबंध न्यासी विमल चिप्पड, तेयुप अध्यक्ष संदीप मुथा, अणुव्रत समिति मंत्री स्वरूपचन्द दाँती, जैन महिला महासंघ की अध्यक्षा कमला मेहता और अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। कार्यक्रम का कुशल संचालन एवं आभार ज्ञापन मंत्री हेमलता नाहर ने किया।

भिलोड़ा

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान मे तेरापंथ महिला मंडल भीलोडा द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष में भव्य रैली का आयोजन किया जिसमें माहेश्वरी, अग्रवाल और गुजराती समाज की 50 बहनों ने भाग लिया। मंचीय कार्यक्रम की शुरुआत उपासिका प्रेरणा बाफना ने नमस्कार महामंत्र से की। भिलोड़ा महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण एवं प्रेरणा गीत का संगान किया गया। अध्यक्षा रेखा भटेवरा ने आए हुए सभी मेहमानों का स्वागत किया। भिलोड़ा महिला पुलिस इंस्पेक्टर एम. एम. मालीवाल ने साइबर फ्रॉड से बचने के उपाय बताए। माहेश्वरी महिला मंडल की अध्यक्ष डिंपल मूंदड़ा ने नारी सशक्तिकरण पर अपने विचार व्यक्त किये। कवयित्री प्रेरणा बाफना ने अपनी कविता के माध्यम से प्रस्तुति दी। प्रेरणा सम्मान से प्रेरणा बाफना को सम्मानित किया गया। डीसा महिला मंडल के मंत्री एवं उपासिका संगीता बोरदिया ने अपने वक्तव्य में नारी के कर्तव्य ओर अधिकारों का बोध करवाया। भिलोड़ा महिला मंडल की सदस्य श्रद्धा दुगड़ ने हास्य व्यंग्य से सबका दिल जीत लिया। कार्यक्रम में 82 महिलाओं की उपस्थिति रही। संचालन एवं आभार ज्ञापन रीना दक ने किया।

चेंबूर

अभातेममं के निर्देशानुसार श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ महिला मंडल, चेंबूर द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर नारीत्व का उत्सव स्वर धारा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से किया गया। मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत की प्रस्तुति दी। चेंबूर महिला मंडल की अध्यक्षा मनीषा कोठारी ने सभी का स्वागत किया और महिला दिवस की बधाई दी। वनिता बाफना, सूरज त्रिपाठी, नैना कोठारी ने कविता प्रस्तुत की। महाराष्ट्र प्रभारी निर्मला चंडालिया ने नैना कोठारी को प्रेरणा सम्मान से सम्मानित किया। शिक्षा के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बनाने वाली डॉ. मोनिका लोढ़ा को भी प्रेरणा सम्मान से सम्मानित किया गया। उन्होंने अपने वक्तव्य में सभी महिलाओं को महिला दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि खुद में विश्वास रखें, लाइफ को बैलेंस रखे। महाराष्ट्र प्रभारी निर्मला चंडालिया ने अपने विचारों में बताया कि नारी है तो सब कुछ है। चाहे वह मां, बहन या पत्नी के रूप में हो। चेंबूर की कॉरपोरेटर आशा ताई ने भी अपने विचार रखे। सभा अध्यक्ष रमेश धोका ने कविता के माध्यम से बताया कि नारी के बिना सृष्टि की रचना करना असंभव है। कार्यक्रम में उपस्थित महिला पुलिसकर्मी और अन्य संप्रदायों का प्रतिनिधित्व कर रही बहनों, एवं अतिथियों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन उपाध्यक्ष विशाखा बाफना और मंत्री बेला डांगी ने किया। कोषाध्यक्ष रेखा डागलिया ने आभार ज्ञापन किया। सहमंत्री डिंपल मेड़तवाल और संगठन मंत्री वनीता बडोला ने सभी का स्वागत किया।

नवरंगपुर

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल नवरंगपुर द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में प्रेरणा सम्मान एवं स्वर धारा काव्य पाठ का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई, जिसके बाद मंडल अध्यक्ष बॉबी जैन ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने आचार्य श्री तुलसी और साध्वीप्रमुखा श्री कनकप्रभाजी के योगदान पर प्रकाश डालते हुए महिलाओं के आध्यात्मिक और सामाजिक विकास की दिशा में उनके प्रयासों की अवगति दी। इस अवसर पर जेमा मणि बिसोई को प्रेरणा सम्मान से सम्मानित किया गया, साथ ही प्रोमोदा दास का भी साहित्य भेंटकर अभिनंदन किया गया। मंत्री रीना जैन ने महिला सशक्तिकरण पर विचार रखते हुए कहा कि महिलाओं ने हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, और समाज को सदैव उनका सम्मान करना चाहिए। मुख्य अतिथि जेमा मणि बिसोई ने तेरापंथ महिला मंडल की सराहना करते हुए महिलाओं की जागरूकता को महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने ऐतिहासिक महिलाओं जैसे सीता, कुंती, सावित्री आदि का उल्लेख कर नारी के महत्व को दर्शाया। पूर्व अध्यक्ष लता जैन ने कुशल संचालन किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
07 अप्रैल - 13 अप्रैल, 2025

'हेल्थ इज वेल्थ' कार्यशाला का हुआ समायोजन

राजाजीनगर।

तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एवं डेंटल केयर श्रीरामपुरम में साध्वी संयमलता जी ठाणा 4 के सान्निध्य में हेल्थ इज वेल्थ कार्यशाला का समायोजन किया गया।

कार्यशाला का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। साध्वीश्री उद्बोधन प्रदान करते हुए कहा - जीवन को सुखी और समृद्ध बनाने में स्वास्थ्य बहुत आवश्यक है, और उसके लिए हमारा आहार सात्विक रहे, आचार-विचार भी शुद्ध रहे।

साध्वी मार्दवश्रीजी ने कार्यशाला का संचालन करते हुए कहा – स्वास्थ्य जीवन की सफलता का प्रथम सोपान है। अनेक महान व्यक्तियों ने हेल्थ को प्राथमिकता देते हुए वेल्थ को बनाया है। तेयुप राजाजीनागर से राजेश देरासरिया ने एटीडीसी श्रीरामपुरम की संक्षिप्त जानकारी प्रदान की।

इस अवसर पर राजाजीनगर सभा अध्यक्ष अशोक चौधरी एवं सभा परिवार, महिला मंडल अध्यक्षा उषा चौधरी एवं महिला मंडल परिवार, तेयुप अध्यक्ष कमलेश चोरड़िया एवं सम्पूर्ण तेयुप टीम, तेयुप विजयनगर परिषद से अध्यक्ष कमलेश चोपड़ा, श्रावक-श्राविका समाज की अच्छी उपस्थिति रही।

सरस भक्ति संध्या का आयोजन

चेन्नई।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, चेन्नई द्वारा जरूरतमंद बच्चों की शिक्षा में सहयोग के उद्देश्य से राजा अन्नामलाई मंडपम में संगायक कमल सेठिया की जैन एवं तेरापंथ के लोकप्रिय गीतों और भजनों की प्रस्तुति 'सरस भक्ति संध्या' का आयोजन किया गया।

इस आध्यात्मिक संध्या का शुभारंभ TPF की महिला सदस्यों द्वारा मंगलाचरण से हुआ। TPF चेन्नई चैप्टर की अध्यक्षा बबीता चोपड़ा ने स्वागत संबोधन प्रस्तुत करते हुए कार्यक्रम के महत्व को रेखांकित किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मांडोत ने TPF की स्थापना से लेकर वर्तमान गतिविधियों तक की जानकारी साझा करते हुए समाज के प्रतिभावान छात्रों के लिए प्राथमिक से उच्च स्तरीय शिक्षा सहयोग की रूपरेखा प्रस्तुत की।

कमल सेठिया की सुमधुर आवाज में भक्तगणों ने भक्ति के इस अद्वितीय सागर में गोता लगाया। आचार्य महाप्रज्ञ शिक्षा सहयोग अभियान के इस महान उद्देश्य के समर्थन में, स्थानीय भक्तों के साथ-साथ यूट्यूब लाइव के माध्यम से जुड़े अनेकों श्रद्धालुओं ने भी सहभागिता निभाई। परिणामस्वरूप, 225 से अधिक बच्चों की शिक्षा के लिए सहर्ष आर्थिक अनुदान देने की घोषणा की गई। इस अवसर पर अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष रमेश डागा, अमृतवाणी अध्यक्ष ललित दुगड़, टीपीएफ के राष्ट्रीय महामंत्री मनीष कोठारी, श्री जैन महासंघ अध्यक्ष प्यारेलाल पितलिया, तेरापंथ सभा अध्यक्ष अशोक खतंग आदि अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

कार्यक्रम संयोजक रेखा गादिया एवं विपुल मुणोत ने इस आयोजन में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

डॉ. कमलेश नाहर एवं अनिल लूनावत ने इवेंट एडवाइजर के रूप में अपनी भूमिका निभाई। कार्यक्रम का कुशल संचालन प्रीतिका मुणोत ने किया, जबकि सचिव जयेश डागा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र **'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स'** में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार मोबाइल नं. **8905995002** पर व्हाट्सअप अथवा **abtyptt@gmail.com** पर ई-मेल के माध्यम से भेजें।

समाचार पत्र ऑनलाइन पढ़ने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।
https://terapanthtimes.org/

:: निवेदक ::
अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

परिवार सौहार्द कार्यशाला का आयोजन

स्नेहिल भावनाओं का मुख्यालय है परिवार

हिन्दमोटर।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में परिवार सौहार्द कार्यशाला का आयोजन श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, हिंद मोटर द्वारा शंकर विद्यालय में किया गया। इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनिश्री ने कहा- समाज की सबसे छोटी इकाई है-परिवार। निकटतम सहवर्ती व्यक्तियों के समूह का नाम है-परिवार। परिवार स्नेहिल भावनाओं का मुख्यालय है।

परिवार सत्यम् शिवम् सुन्दरम् का शिवालय है। परिवार मानवीय गुणों का सचिवालय है। परिवार समूह चेतना का प्रतीक है। परिवार में कायदा नहीं व्यवस्था होती है, भय नहीं भरोसा होता है, शोषण नहीं पोषण होता है, आग्रह नहीं आदर होता है, सम्पर्क नहीं संबंध होता है, अर्पण नहीं समर्पण होता है।

परिवार में सौहार्द का विकास बहुत आवश्यक है। परिवार में सौहार्द विकास के लिए विनय, समर्पण, प्रेम, सहिष्णुता, संयम, अनाग्रह, संगठन, कृतज्ञता आदि गुणों का होना जरूरी है। आदमी व्यसन व औरत फैशन छोड़ दे तथा पति गुस्सा व पत्नी जिद्द छोड़ दे तो परिवार का माहौल स्वर्ग सा सुन्दर हो सकता है।

इस अवसर पर मुनि परमानंद जी ने कहा - सही सोच के साथ परिवार के सदस्य एक दूसरे के पूरक बनकर रहने से परस्पर सौहार्द विकसित हो सकता है। मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल हिंदमोटर के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण तेरापंथी सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष धनराज सुराणा ने दिया।

इस अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद् हिंदमोटर व ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं द्वारा गीत प्रस्तुत किया गया। आभार ज्ञापन सभा के मंत्री मनीष रांका ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया। इस अवसर पर अच्छी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

सकारात्मक सोच परिवार को बनाती है समृद्ध

मुक्ताईनगर।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि अर्हत कुमारजी ने मुक्ताईनगर में 'टूटते रिश्ते बिखरते परिवार' विषय पर अपने उद्बोधन में कहा कि परिवार वह नीड़ है जहां थका-हारा व्यक्ति सुकून की अनुभूति करता है।

आज परिवार जिस तरह बिखर रहे हैं, यह एक बहुत बड़ी समस्या है। आज दो पीढ़ियों में कोई संवाद नहीं है, दिलों में इतनी दूरियां है कि सब एक ही छत के नीचे रहते हुए भी अपने-अपने कमरों में बंद है। आज के सम्बन्धों में मात्र संयोग है पर सहयोग नहीं है, समझ तो है पर संवेदना नहीं है, साथ-साथ तो रहते हैं पर साथ-साथ जीते नहीं सिर्फ जीने का नाटक करते है। दुनिया में सात वार होते है पर ये वार तभी खुशहाल होते है तब आठवां वार परिवार खुशहाल हो। हम परिवार की कीमत समझ कर माधुर्य घोलने का प्रयास करें।

मुनि भरत कुमारजी ने कहा कि जब सदस्यों के बीच अहंकार का भाव आ जाता है तब रिश्ते और परिवार टूट जाते हैं। मुनि जयदीप कुमार जी ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में आमदार चन्द्रभाऊ पाटिल एंव सकल हिन्दू समाज व व्यापारी एसोसिएशन की अच्छी उपस्थिति रही।

होली पर्व पर विविध आध्यात्मिक कार्यक्रम

गुडवान्चेरी

मुनि दीपकुमारजी के सान्निध्य में श्री जैन स्थानक, गुडवान्चेरी में होली चातुर्मास के अवसर पर 'होली के रंग, अध्यात्म के संग' विषयक कार्यक्रम श्री एस. एस. जैन संघ गुडवान्चेरी द्वारा आयोजित किया गया। जिसमें गुडवान्चेरी एवं अन्य क्षेत्रों के श्रावक-श्राविकाएं भी उपस्थित थे। मुनि दीपकुमारजी ने कहा कि होली लौकिक उत्सवों में प्रमुख उत्सव है।

वर्ष भर के तनाव को भूलने या मिटाने का यह सबसे अच्छा दिन है। होली रंगों का त्यौहार है। मनुष्य रंगों का समवाय है। स्थूल दृष्टि से वह हाड- मांस का पुतला है, किंतु सूक्ष्म दृष्टि से देखे तो मनुष्य रंगों की ही प्रतिकृति और उपज है। आभामंडल जो सर्वाधिक शक्तिशाली होता है, वह भी रंगों की अनुकृति है। होली के रंगों को हम अध्यात्म के रंग में रंग दे। मुनिश्री ने आगे कहा कि जैन धर्म के अनुसार चातुर्मासिक पक्खी का संबंध इसके साथ जुड़ा हुआ है। बीती बातों को भूलना सीखे। होली शब्द भी यही संदेश देता है होली यानी जो हो गया उसे भूल जाओ। होली का अंग्रेजी के अनुसार अर्थ होता है पवित्रता। इस पर्व से हम पवित्रता की शिक्षा ग्रहण करें। लोग होली जलाते हैं पर, वास्तव में कषायों की, बुराइयों की होली जलाएं। मुनिश्री ने जैन धर्म में प्रचलित होली की कथा सुनाई एवं हाजरी का वाचन किया। नमस्कार महामंत्र के साथ रंगों का ध्यान करवाया। मुनि काव्यकुमारजी ने कहा कि होली पर्व आनंद का संदेश देता है, इस अवसर पर वैर-विरोध की गांठों को खोलकर क्षमा को विकसित करें। कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल पल्लावरम ने गीत का संगान किया। तेरापंथी सभा पल्लावरम के सभा अध्यक्ष दिलीप भंसाली ने अपने विचार व्यक्त किये। आभार ज्ञापन पल्लावरम सभा मंत्री राकेश रांका ने किया। कुशल संचालन मुनि काव्यकुमारजी ने किया।

बोलाराम

होली चातुर्मास के अवसर पर तेरापंथ भवन बोलाराम में डॉ. साध्वी गवेषणाश्री जी ने कहा - होली भारत का प्रमुख पर्व है। चैत्र मास के प्रारंभ के साथ ही पतझड की विदाई और बसंत का आगमन हो जाता है। बसंत उल्लास की ऋतु है। यह उत्सव राग-रंग का पर्व है। मुख्य रूप से यह पर्व खेती और किसानों का पर्व है। इस पर्व का स्वास्थ्य के साथ भी गहरा संबंध है। आरोग्य की चर्चा करें तो आदमी का मन, शरीर, स्वास्थ्य आदि रंगों से प्रभावित होते है, इसीलिए कि वह स्वयं रंगमय है। भगवती सूत्र में आता है कि हिंसा का भी अपना रंग है। झूठ, चोरी, मोह, ईर्ष्या का भी अपना रंग है। रंगों के आधार पर एक सिद्धान्त् का विकास हुआ वह है- लेश्या। हमारी सारी भावधारा लेश्या है। हमारे प्रत्येक विकास के साथ लेश्याओं का संबंध है। इसीलिए आवश्यकता है यह रंगो का पर्व लेश्या के संग खेले तो आरोग्य का पर्व हो सकता है। साध्वी मेरुप्रभाजी ने सुमधुर गीत का संगान किया। साध्वी दक्षप्रभाजी ने भी मधुर संगान के साथ अपनी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम की शुरुआत स्थानीय महिला मंडल के मंगलाचरण से हुई। बोलाराम तेरापंथ सभा के अध्यक्ष रतन सुराणा व सिंकदराबाद सभा के अध्यक्ष सुशील संचेती ने अपने विचार रखे।

नवयुवती बहनों ने पंच-परमेष्ठी के रंगों की महत्ता बताते हुए सुंदर प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मयंकप्रभाजी ने किया।

आध्यात्मिक मिलन समारोह कार्यक्रम

गुवाहाटी।

आचार्य श्री महाश्रमणजी के सुशिष्य डॉ. मुनि ज्ञानेंद्र कुमारजी ठाणा-2 एवं मुनि प्रशांत कुमारजी ठाणा-2 का आध्यात्मिक मिलन मधुकुंज स्थल पर हुआ। कार्यक्रम स्थल में समारोह को संबोधित करते हुए मुनि डॉ. ज्ञानेंद्र कुमारजी ने कहा- हमारे धर्मसंघ में आचार, अनुशासन, आत्मीय सौहार्द भाव जीवन तत्व के रूप में पुष्ट हैं। आचार्यों ने अपनी दूरदर्शिता, समयज्ञता, साधना, युगानुकूल चिंतनशैली से जनमानस को बहुत कुछ दिया है। संघ में साधु-साध्वी का आपसी व्यवहार जीवंत प्रेरणा है। प्रमोदभाव से भावित व्यक्ति सकारात्मक चिंतनशैली में जीता है। सौहार्दभाव व्यक्ति की मानसिकता को स्वस्थ बनाता है। प्रत्येक व्यक्ति, वस्तु में उपयोगी तत्व भी होते हैं। पारखी व्यक्ति गुणों की परख करता है। हम गुणग्राही बनना सीखें। मुनि प्रशांत कुमारजी, मुनि कुमुद कुमारजी से तेईस महीने बाद मिलने का अवसर आया। उनके साथ रहना हमें सात्विक प्रसन्नता देता है।

पिछले चौदह वर्ष से संयोग ऐसा बनता आ रहा है कि प्रत्येक वर्ष मिलन हो ही जाता है। ये मिलन दूध पानी का नहीं ये तो दूध मिश्री का मिलन है। दोनों संतों की अपनी विशेषता है। मुनि प्रशांत कुमारजी आज साठ वर्ष पूर्ण कर रहे हैं ये स्वस्थ रहकर आत्मसाधना करते रहें।

मुनि प्रशांत कुमारजी ने कहा- सौभाग्यशाली हैं कि हमें ऐसा अनुशासित, मर्यादित धर्मसंघ मिला। पुण्यप्रतापी आचार्यों की सन्निधि हमारे विकास का हेतु बन रही है। आचार्यों की कृपा से हमारी आत्मसाधना उज्ज्वल बन रही है। आचार्य प्रवर हमारी चिंता करते हैं इसलिए हम निश्चिंत हैं। मुनि ज्ञानेंद्र कुमारजी स्वामी अपने आप में विशिष्ट संत हैं। स्वयं की आत्मसाधना करते हुए जनकल्याण के लिए भी सजग रहते हैं। आपश्री ने वर्षों तक मुनि जयचंदलालजी स्वामी की मनोयोग से सेवा दायित्व को निभाया। मौन, ध्यान एवं तप की साधना से परिपूर्ण परिश्रमी जीवन प्रेरक संदेश है। ऐसे संतों के साथ रहकर बहुत कुछ प्राप्त कर सकते हैं। मुनि पदम कुमारजी परिश्रमी, कार्यकुशल, व्यवहार कुशल, सेवाभावी संत हैं।

मुनि कुमुद कुमारजी ने कहा- पूज्यवरों की कृपा से यहां असम की धरा पर चार संतों के चातुर्मास हो रहे हैं। सिलीगुड़ी चातुर्मास के पश्चात मुनि श्री डॉ. ज्ञानेंद्र कुमारजी से गुवाहाटी की धरा पर मिलन हो रहा है। जैसे एक बच्चा मां की गोद में आकर निश्चिंत हो जाता है वैसे ही हम मुनिश्री के पास आकर निश्चिंत हो जाते हैं। बीस वर्षों से आडासन शयन नहीं करना, वर्षों से वर्षीतप के साथ-साथ घंटों-घंटों ध्यान-जप की आराधना आपश्री की साधना है। इनसे जितना ग्रहण कर सकते हैं उसे ग्रहण कर स्वयं का कल्याण करें। मुनि पदम कुमारजी की सेवा भावना, साधना, पुरुषार्थी जीवन से बहुत कुछ प्राप्त कर सकते हैं।

मुनि पदम कुमारजी ने कहा- गौरवशाली तेरापंथ ने हमें पहचान दी है। हमें साधना के पथ पर निरन्तर आगे बढ़ने का अवसर मिल रहा है। आज मुनि प्रशांत कुमारजी स्वामी की षष्ठीपूर्ति पर मिलने का अवसर मिला। आप स्वस्थ मस्त रहकर आत्म विकास करते रहें। आप शांत, प्रशांत, धीर-गंभीर संत पुरुष हैं। आपने गुरु की कृपा को प्राप्त कर उनके मन में स्थान बनाया है। आपश्री के साथ रहने का मुझे अवसर मिला ये मेरा सौभाग्य है।

मुख्य अतिथि गुवाहाटी के ज्वाइंट कमिश्नर आईपीएस अंकुर जैन ने कहा कि जीवन में साधु-संतों के सान्निध्य का बहुत लाभ मिलता है। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल के मंगलाचरण से हुआ। सभा अध्यक्ष बाबूलाल सुराणा ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। महासभा, पूर्वोत्तर सभा, तेयुप, महिला मंडल, बिहार नेपाल सभा, दिगम्बर जैन पंचायत, जीतो गुवाहाटी एवं नजदीकी क्षेत्रों की विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने गीत एवं वक्तव्य के द्वारा विचारों की अभिव्यक्ति दी। मुख्य अतिथि एवं आचार्य महाश्रमण योगक्षेम प्रवास व्यवस्था समिति के महामंत्री निर्मल कोटेचा का सभा द्वारा सम्मान किया गया। हस्तरेखा में पीएचडी डिग्री गोल्ड मेडल प्राप्त प्रवीणा बंसल को मुख्य अतिथि ने सम्मानित किया। आगम प्रभारी दिलीप दुगड़ ने मुनिश्री को आगम भेंट किए। प्रेरणा घोड़ावत ने हस्तनिर्मित कलाकृति भेंट की।

आभार ज्ञापन सभा मंत्री राजकुमार बैद ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि कुमुद कुमारजी एवं सभा के वरिष्ठ सहमंत्री राकेश जैन ने किया।

जीवन भर के लिए सब पापों का त्याग करना है साधुत्व

गंगाशहर।

बोथरा भवन में दीक्षार्थी कल्प मेहता का स्वागत उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमारजी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुनि कमल कुमारजी ने कहा कि मुनि शरीर को भले छोड़े पर धर्म को न छोड़े। हम सभी में अपने गुरूदेव के प्रति अश्रद्धा के भाव नहीं आने चाहिए, गुरू के प्रति अपनी आस्था को सुदृढ़ रखना चाहिए। आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ दोनों प्रायोगिक धर्माचार्य हुए थे। वे प्रयोग के द्वारा रोग ठीक करते थे। स्वामी जी ने जो सिद्धान्त दिये थे उन सिद्धान्तों के कारण ही आज हम सब एक है।

आचार्य श्री तुलसी एक समयज्ञ गुरु हुए, जिन्होंने कितने-कितने काम किए, तेयुप, किशोर मण्डल, महिला मण्डल, कन्या मण्डल जैसी संस्थाओं का निर्माण किया। मुनिश्री ने दीक्षार्थी कल्प के लिए कहा कि साधुत्व को स्वीकार करना हंसी खेल नहीं, जीवन भर के लिए सब पापों का त्याग करना होता है। जो साधु सचेत होता जागरूक होता है तो वह इस लोक और पर लोक दोनों में सुखी होता है। मुनिश्री ने कल्प को शिक्षा देते हुए कहा कि साधुपण में रम जाना, गुरू भेजे वहीं जम जाना। मुनि श्रेयांसकुमारजी ने कल्प के लिए संयम पथ पर उत्तरोत्तर विकास की कामना के साथ गीत का संगान किया। मुनि विमलविहारीजी ने कहा कि दीक्षा वही ले सकता है जिसका संकल्प मजबूत होता है। मुनि प्रबोधकुमारजी, मुनि नमिकुमारजी, मुनि मुकेशकुमारजी ने कल्प के भावी जीवन की मंगल कामना करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। दीक्षार्थी कल्प ने कहा कि आत्मा में रमण करना, आत्मा में लीन हो जाना ही असली साधु जीवन है। जैसे पानी पुरी चाहे कितनी भी खा लो लेकिन मन नहीं भरता इसी प्रकार मन यही करता है कि मुनि कमलकुमार जी मुझे और प्रेरणा देते रहें। तेरापंथी सभा के मंत्री जतन संचेती ने कहा कि संयम जीवन में चलने वाला अपना सम्पूर्ण रिजर्वेशन कर लेता है। दीक्षार्थी कल्प अपना आध्यात्मिक विकास करता रहे। दीक्षार्थी कल्प का स्वागत तेरापंथ न्यास के न्यासी जैन लूणकरण छाजेड़ ने व तेरापंथी सभा के उपाध्यक्ष पवन छाजेड़ ने पताका और साहित्य भेंट करके किया।

❖ जो व्यक्ति भाग्य भरोसे बैठ जाता है, पुरुषार्थ नहीं करता, मेरी दृष्टि में वह दुनिया का अभागा व्यक्ति है।

– आचार्य श्री महाश्रमण

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
07 अप्रैल - 13 अप्रैल, 2025

संयम स्वर्णोत्सव कार्यक्रम का आयोजन

गंगाशहर।

साध्वी दीपमाला जी के दीक्षा पर्याय के 50 वर्षों की पूर्णता पर तेरापंथी सभा, गंगाशहर द्वारा शांति निकेतन में संयम स्वर्णोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी विशदप्रज्ञा जी, साध्वी लब्धियशा जी, 'शासनश्री' साध्वी मंजुप्रभा जी, 'शासनश्री' साध्वी शशिरेखा जी, 'शासनश्री' साध्वी कुंथुश्रीजी, साध्वी जिनबाला जी और साध्वी ललितकला जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ। सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी विशदप्रज्ञा जी ने कहा— संयम जीवन की एक घड़ी सांसारिक जीवन के एक करोड़ वर्षों के बराबर होती है। संयम का कोई मूल्य नहीं लगाया जा सकता। साध्वी दीपमाला जी अत्यंत सरल और विनम्र व्यक्तित्व की धनी हैं। वे हरियाणा की वीर पुत्री हैं।

अन्य साध्वियों ने भी अपने-अपने वक्तव्यों में साध्वी दीपमाला जी के जीवन से जुड़े संस्मरण सुनाए और उनके 50 वर्षों के संयम पर्याय पर शुभकामनाएँ प्रेषित कीं। साध्वी प्रशमयशा जी ने आचार्य श्री महाश्रमण जी से प्राप्त संदेश का वाचन किया, इसके साथ ही, उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी द्वारा रचित गीतिका का संगान एवं मुक्तकों का पाठ किया। साध्वी कौशलप्रभा जी ने साध्वीप्रमुखाश्रीजी से प्राप्त संदेश का वाचन किया, जबकि साध्वी मल्लिकाश्रीजी ने शांति निकेतन की वयोवृद्ध साध्वी ज्ञानवती जी से प्राप्त संदेश को पढ़कर सुनाया।

सभी संस्थाओं के पदाधिकारियों ने साध्वी दीपमाला जी के संयम पर्याय के 50 वर्ष पूर्ण होने पर समग्र तेरापंथ समाज द्वारा संकलित त्याग एवं तप की सूची को भेंट किया।

साध्वी दीपमाला जी के परिवारजनों ने भी अपनी आध्यात्मिक श्रद्धा एवं त्याग-तप की भेंट समर्पित की। कार्यक्रम में साध्वी वृन्द ने सामूहिक गीतिका प्रस्तुत कर साध्वीश्री को बधाई दी।

पृष्ठ 1 का शेष

समस्त कच्छ जैन समाज ने...

'सवाया कच्छी पूज' अलंकरण के संदर्भ में पूर्व विधायक पंकजभाई मेहता, आराधना भवन के ट्रस्टी वाडीलाल सावला (सुवई), श्री वर्धमान जैन श्रावकसंघ रापर के अध्यक्ष डॉ. रमेश डोशी, सइ जैन संघ के अध्यक्ष नवीनभाई वोरा, त्रम्बो जैन संघ के शांतिलालभाई शाह, श्री कच्छ वागड़ बे चौबीसी स्थानकवासी जैन समाज के अध्यक्ष कीर्तिभाई संघवी, जैन जागृति केंद्र रापर के अध्यक्ष विनोदभाई डोशी, जैन सोशल ग्रुप रापर के अध्यक्ष अशोकभाई कुबडिया, महिला मंडल की अध्यक्ष सुषमा बहन मोरबिया, छः कोटी संघ के अध्यक्ष कीर्तिभाई मोरबिया, आठ कोटि संघ के अध्यक्ष नवीन वोरा, तेरापंथ संघ रापर के अध्यक्ष रमणीकभाई खंडोर, डॉ. मठ साहब बेला के लक्ष्मणसिंह वाघेला, भाजपा नेता केशुभाई वाघेला, एकता नगर सम्मान संघ के अध्यक्ष बलवंतभाई ठक्कर आदि उपस्थित थे। समस्त जैन समाज द्वारा अलंकरण का बड़े हर्ष के साथ स्वागत किया गया।

चतुर्दशी होने के कारण शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में आयोजित मंगल प्रवचन में गुरुकुलवासी साधु-साध्वियों की विशेष उपस्थिति रही। साथ ही रापर जैन समाज के अन्य गणमान्य लोग भी उपस्थित थे। आचार्यप्रवर ने अपनी अमृत देशना में पवित्र उपदेश देते हुए कहा कि जीवन में शरीर, वाणी और मन तीन क्रियाशील साधन हैं। जीव के पास तीन कर्मचारी हैं। शरीर के माध्यम से व्यक्ति चलता है, घूमता है, खड़ा होता है, बैठता है, खाता-पीता है और यात्रा करता है। मनुष्य वाणी से बोलता है और मन से चिंतन, कल्पना, स्मरण, विचार और समीक्षा करता है। मन एक ऐसा तत्व है जिसे कुटिल घोड़ा भी कहा गया है। वह एक कुलीन घोड़ा भी बन सकता है। कहा भी जाता है- 'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।'

जिनमें हिम्मत होती है, वे थोड़ी कठिनाई और मुश्किल में भी हिम्मत के साथ आगे बढ़ते हैं। यदि जीवन में मन की स्थिति अच्छी हो तो जीवन अधिक आनंददायक हो सकता है। अच्छी मनःस्थिति के लिए सबसे पहले मन में प्रसन्नता और शांति होनी चाहिए, दूसरा मन में शक्ति और साहस होना चाहिए और तीसरी बात जब हम सोचें तो केवल अच्छे विचार ही सोचें। अगर ये तीनों चीजें मन से जुड़ जाएं तो मन खुश रह सकता है। मनुष्य के मन में प्रसन्नता होनी चाहिए। यदि मन खुश है तो व्यक्ति अच्छे काम कर सकता है और कड़ी मेहनत कर सकता है। यदि मन उदास और अप्रसन्न है तो वह आर्त्त ध्यान की ओर जा सकता है। जीवन को अनुकूल और प्रतिकूल दोनों ही परिस्थितियों में समता के मार्ग पर बने रहने का प्रयास करना चाहिए।

जीवन में कठिनाइयाँ आना स्वाभाविक है – कभी व्यावसायिक कठिनाइयाँ, कभी सामाजिक कठिनाइयाँ, तो कभी पारिवारिक कठिनाइयाँ। कभी-कभी अपमान, विरोध सहना पड़ सकता है तो कभी-कभी धमकियाँ भी मिल सकती हैं। हालाँकि, अगर किसी व्यक्ति में मन की शक्ति है, मनोबल ऊंचा है तो वह समस्याओं का सामना आसानी से कर सकता है। आचार्यश्री ने उदाहरण देते हुए कहा - विरोध होने पर भी व्यक्ति को शांति और समता बनाए रखनी चाहिए। मन में शांति, अच्छे विचार और मन की शक्ति हो तो मन का घोड़ा श्रेष्ठ घोड़ा बन सकता है। पूज्यप्रवर ने उपस्थित चारित्रात्माओं को मुमुक्षु तैयार करने की प्रेरणा प्रदान की। चतुर्दशी के अवसर पर पूज्यवर ने हाजरी वाचन कराते हुए प्रेरणाएं प्रदान करवायी। आचार्य प्रवर की अनुज्ञा से साध्वी देवार्यप्रभाजी एवं साध्वी धन्यप्रभाजी ने लेखपत्र का वाचन किया। आचार्य श्री ने उन्हें दो- दो कल्याणक बक्सीस दिराए। उपस्थित साधु-साध्वियों ने अपने स्थान पर खड़े होकर लेख पत्र का समुच्चारण किया। आचार्यवर के मंगल प्रवचन के पश्चात साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशाजी ने रापरवासियों को संबोधित करते हुए कहा कि कि दुनिया में अनेक प्रकार से व्यक्ति दुःखी हो सकता है। दुनिया का यह सत्य है कि दुःख है, दुःख का हेतु भी है। संसार दुःख बहुल है। यहां कभी संयोग का, तो कभी वियोग का दुःख होता है। अनेक कारण से व्यक्ति संतृप्त बन जाता है। संसार में जन्म, मरण, बुढ़ापा और रोगों का दुःख है। कामनाओं से दुःख हो सकता है। जीवन में संयम रुपी ब्रेक हो। इच्छाओं का सीमाकरण करें। अनन्त के त्याग से अनन्त की प्राप्ति हो सकती है।

स्वागत समारोह में पंकजभाई मेहता, छ कोटि संघ के अध्यक्ष कीर्तिभाई मोरबिया, आठ कोटि संघ के अध्यक्ष नवीनभाई वोरा, वागड़ बे चौबीसी संघ के अध्यक्ष अशोकभाई, राजा भाई, भचाऊ पूर्व प्रमुख विरेन्द्र सिंह, बाबु भाई शाह, 'बेटी तेरापंथ की' से छाया विपुल बाबरिया, बालिका खुशी शाह, रमेशभाई डोशी और कच्छ-भुज के अध्यक्ष वाड़ीभाई मेहता आदि व्यक्तियों ने अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

बोलती किताब

अवचेतन मन से सम्पर्क

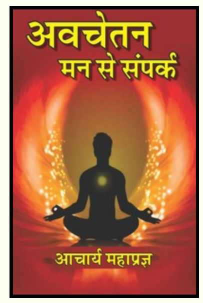

श्वास: आत्म-परिचय का माध्यम - श्वास केवल जीवन का आधार नहीं, बल्कि आत्म-परिचय का माध्यम भी है। इसके द्वारा हम स्वयं को और दूसरों को समझ सकते हैं। जैसे-जैसे मनोभाव बदलते हैं, श्वास की लय भी परिवर्तित होती है। यह परिवर्तन स्थूल और सूक्ष्म स्तर पर निरंतर चलता रहता है। इसी कारण, श्वास विज्ञान हमें अपने व्यक्तित्व को जानने और उसे विकसित करने का मार्ग प्रदान करता है।

भावनाएँ और श्वास का संबंध - भावनाएँ और श्वास आपस में गहराई से जुड़े हुए हैं। वैज्ञानिक शोध बताते हैं कि जब कोई व्यक्ति झूठ बोलता है, तो उसकी श्वास की गति बदल जाती है। इजरायल में विकसित 'माइक्रोवेव रेस्पिरेशन मॉनीटर' जैसे उपकरण इस परिवर्तन को मापने में सक्षम हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि हमारे मानसिक और भावनात्मक परिवर्तन श्वास की लय को प्रभावित करते हैं और इसके अध्ययन से मनोभावों को समझा जा सकता है।

काम और मानसिक संतुलन - मानव जीवन में कामना एक मौलिक प्रवृत्ति है, जो अतीत के संस्कारों से प्रभावित होती है। यह कामनाएँ हमारे मन को संचालित करती हैं और जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करती हैं। जब कामनाओं का परिष्कार नहीं होता, तो यह असंतोष, अशांति और अवसाद को जन्म देती हैं। इसके विपरीत, जब व्यक्ति अपनी इच्छाओं को संतुलित करता है, तो वह प्रसन्नता, शांति और संतोष का अनुभव करता है।

परिष्कार का मार्ग: धर्म और संयम - काम और अर्थ के अपरिष्कृत रूप मानसिक अस्थिरता को जन्म देते हैं। इनका समाधान केवल बाहरी नियंत्रण से संभव नहीं है, बल्कि आंतरिक परिष्कार आवश्यक है। धर्म और आत्मसंयम के द्वारा व्यक्ति अपनी कामनाओं को परिष्कृत कर सकता है। जब मन शुद्ध होता है, तो उसकी इच्छाएँ भी संतुलित होती हैं, जिससे जीवन में स्थिरता और संतोष स्थापित होता है। इस पुस्तक में हम आत्मविकास के इस मार्ग को विस्तार से समझेंगे।

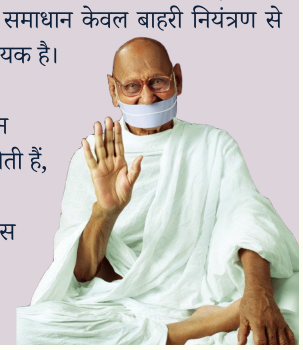

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

मिशन ऑफ मैनर्स

अ गाइड टू बिकम सुपरस्टार्स का आयोजन

नोखा।

तेरापंथ भवन में 'शासन गौरव' साध्वी राजीमतीजी के सान्निध्य में प्रोविजनल कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग ट्रेनर भावना मरोठी ने ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों के लिए 'इम्पोर्टेंस ऑफ मैनर्स एंड एटिकेट्स' पर सत्र आयोजित किया।

उन्होंने मैजिक वर्ड्स : थैंक यू , सॉरी, एक्सक्यूज़ मी, वेलकम, प्लीज जैसे शब्दों का कैसे और कहां प्रयोग करने की जानकारी दी। बच्चों को गेम्स और एक्टिविटीज़ के जरिये टेबल मैनर्स, अच्छे श्रोता बनने, पर्सनल हाइजीन आदि विषयों पर भी जानकारी दी।

'शासन गौरव' साध्वी राजीमतीजी ने बच्चों को प्रेरणा देते हुए कहा कि अच्छे व्यवहार से सबका मन जीता जा सकता है। इस मौके पर ज्ञानशाला प्रशिक्षिका राजकुमारी मरोठी, सरिता बैद व हर्षित भूरा व सभा के मंत्री मनोज घीया उपस्थित थे।

योजना निर्माण के लिए समय का अवबोध है महत्वपूर्ण : आचार्यश्री महाश्रमण

सेलारी।
29 मार्च, 2025

जिनशासन के प्रभावक आचार्य 'सवाया कच्छी पूज' आचार्यश्री महाश्रमणजी की कच्छ यात्रा समापन की ओर है। परम पूज्य रापर से लगभग 13 किमी का विहार कर सेलारी के सांदीपनि विद्या मंदिर परिसर में पधारे। मंगल देशना प्रदान कराते हुए पूज्यवर ने फरमाया कि शास्त्र की वाणी है - पण्डित पुरूष ! तुम क्षण को जानो। समय का मूल्यांकन करना चाहिये। समय कितनी काम की चीज होती है। जो आदमी समय को व्यर्थ गंवा देता है, वह स्वयं उतने अंश में मानो व्यर्थ बन जाता है। जो समय को जितना सार्थक करता है, वह स्वयं उतने अंश में सार्थक बन जाता है।

समय का सदुपयोग किया जा सकता है तो कोई दुरूपयोग भी कर सकता है तो कोई अनुपयोग की स्थिति में भी रह सकता है। समय है, उसमें अच्छा काम करें। साधु ने रात का समय ध्यान-जप में लगा दिया, दिन में स्वाध्याय में लगा दिया, बचे हुए समय को सेवा में लगा दिया तो समय का सदुपयोग हो गया।

बुद्धिमान का समय शास्त्र-काव्य की चर्चा में बीतता है पर जो मूर्ख-अज्ञानी है वह अपना समय व्यसन, आलस्य और लड़ाई-झगड़े में बिताएगा। हमें दिन-रात में 24 घंटे मिलते हैं, उनमें से 2-2 मिनट समय निकाला जाये तो 48 मिनट एक सामायिक का कालमान मिल सकता है। सुबह-सुबह की मंगल बेला में सामायिक करना अमृत के समान है। हमारे यहां शनिवार सायं को भी सामायिक होती है।

विद्यालयों में प्रार्थना होती है उसमें भी अच्छे भावों वाली प्रार्थना हो तो प्रेरणा मिल सकती है। अच्छी चीज को देखना, अच्छी चीज को सुनना और अच्छी चीज का उच्चारण करने से भीतर में अच्छे भावों का संचार हो सकता है। अच्छी भावना से हमारे मन में हिंसा आदि की भावना नहीं आ सकती। मन में समता रहती है। अर्हत वन्दना में आगमों की वाणी है। भाव भीनी वन्दना से भी कितनी प्रेरणा मिलती है। हम भगवान की स्तुति-वन्दना करें, प्रार्थना न करें। प्रार्थना करना तो याचक हो जाता है। हमारे यहां प्रार्थना शब्द नहीं चलता है।

समय-अवसर का लाभ उठायें। पहले से सोचकर समय को पकड़ कर रखें। कल से वि.सं. 2082 लग रहा है। हम पहले सोचें और फिर समय का अच्छा लाभ उठावें। समय बीतने पर लौटता नहीं है। कार्य की पहले से रूपरेखा बनाकर कार्य करें। रूपरेखा के बाद क्रियान्विति करें तो कार्य सफल हो सकता है। बिना योजना के कार्य अव्यवस्थित हो जाते हैं या रुक जाता है। योजनाबद्ध कार्य से अच्छी निष्पति आ सकती है।

आचार्यश्री के स्वागत में हंसाबेन खांडोर, बालिका वृत्ति व जिंसी डोसी ने गीत का संगान किया। अनूपचंद मोरबिया, स्थानीय सरपंच महेश चौधरी, विद्या मंदिर की शिक्षिका नमिता सोनी, समग्र जैन समाज-सेलारी की ओर से धर्मेश डोसी ने अपने उद्गार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

ज्ञान युक्त आचार से मिल सकती है पूर्णता : आचार्यश्री महाश्रमण

कूड़ा जामपर।
25 मार्च, 2025

जिनशासन के सजग प्रहरी आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ लगभग 13 किमी का विहार कर कूड़ा जामपर के प्राथमिक विद्यालय में पधारे। पावन प्रेरणा प्रदान कराते हुए पूज्यवर ने फरमाया कि ज्ञान और आचार ये दो चीजें है। एक-दूसरे से सम्बन्धित भी हैं तो एक-दूसरे से अलग भी हो सकती हैं। सम्बन्धित ऐसे कि पहले जानो फिर आचरण करो। अहिंसा, ईमानदारी, सेवा, भक्ति, धर्म इनको पहले जानो फिर आचरण करो।

हम ज्ञान को ईंजन मान लें तो आचार डिब्बों की तरह है, आगे ज्ञान फिर आचरण। इसलिए ज्ञान पूर्वक आचरण करो। शिक्षा-ज्ञान की बात है। नशामुक्ति, चोरी नहीं करना आचरण है। हमारे जीवन में शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है तो चरित्र भी बहुत महत्वपूर्ण है। शिक्षा में अच्छे संस्कारों की भी बात हो। कोरा ज्ञान अधूरा है, आधा हिस्सा आचरण का है। इन दोनों के मिलने से पूरा एक हो सकता है।

परस्परोपग्रहो जीवानाम् - जीव एक दूसरे का सहयोग करे। समुपस्थित विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया - आपस में लड़ाई झगड़ा न करें, मैत्री का भाव रखें। चोरी नहीं करनी चाहिये। नशीली चीजों का भी सेवन न करें। ज्ञान और आचार दोनों की सम्पत्तियां विद्यार्थी में होती है, तो विद्यार्थी कितना सम्पन्न हो सकता है। स्कूल के दिन बड़े महत्वपूर्ण होते हैं। विद्यार्थी का शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक और भावनात्मक विकास हो। सद् ज्ञान का महत्व है, वेशभूषा का थोड़ा मूल्य है। जीवन में सद्गुणों के आभूषण पहनें। इनका विकास करने का प्रयास करें। संस्कारें का पुष्टिकरण होता रहे। एक बच्चा ही महापुरूष बनता है। हम अच्छा काम करते रहें। बच्चों में धार्मिकता, नैतिकता का विकास होता रहे। पूज्यवर ने विद्यार्थियों को सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के महत्व को समझाकर संकल्प स्वीकार करवाये। पूज्यवर के स्वागत में प्राथमिक शाला के शिक्षक किरणभाई सोलंकी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

फार्म–8 (नियम 8 देखिए)

1. प्रकाशन-स्थान	:	नई दिल्ली
2. प्रकाशन-अवधि	:	साप्ताहिक
3. मुद्रक का नाम	:	पंकज कुमार डागा
क्या भारत के नागरिक हैं?	:	हाँ
यदि विदेशी हैं तो मूल देश का नाम	:	नहीं
पता	:	अ0भा0 तेरापंथ युवक परिषद् 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग नई दिल्ली-110002
4. प्रकाशक का नाम	:	पंकज कुमार डागा
क्या भारत के नागरिक हैं?	:	हाँ
यदि विदेशी हैं तो मूल देश का नाम	:	नहीं
पता	:	अ0भा0 तेरापंथ युवक परिषद् 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग नई दिल्ली-110002
5. संपादक का नाम	:	पंकज कुमार डागा
क्या भारत के नागरिक हैं?	:	हाँ
यदि विदेशी हैं तो मूल देश का नाम	:	नहीं
पता	:	अ0भा0 तेरापंथ युवक परिषद् 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग नई दिल्ली-110002
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रतिशत के अधिक से साझेदार हों या जिनका हिस्सा हो	:	अ0भा0 तेरापंथ युवक परिषद् लाडनूं (नागौर-राजस्थान)

मैं पंकज कुमार डागा एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनांक 28-03-2025

पंकज कुमार डागा
(प्रकाशक के हस्ताक्षर)

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
07 अप्रैल - 13 अप्रैल, 2025

वचन को बनाएं प्रभावशाली एवं लाभकारी : आचार्यश्री महाश्रमण

भुज से अहमदाबाद व्यवस्था समिति ने स्वीकार किया दायित्व

फतेहगढ़।
31 मार्च, 2025

तेरापंथ के एकादशम् अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी का फतेहगढ़ प्रवास का दूसरा दिवस। पूज्य सन्निधि में आज कच्छ समाज द्वारा कच्छ स्तरीय मंगलभावना समारोह एवं दायित्व हस्तांतरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। परम पूज्य आचार्यश्री का चातुर्मास वर्ष 2025 में अहमदाबाद में निर्धारित है। अहमदाबाद से अनेक श्रद्धालुजन दायित्व ग्रहण करने हेतु पूज्यवर की सन्निधि में पहुँचे।

पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए शांतिदूत आचार्यश्री ने फरमाया — "जैन वाङ्मय में 'दसवेंआलियं' नामक आगम है, जिसके सातवें अध्ययन में भाषा संबंधी दिशा-निर्देश दिये गये हैं। वहाँ कहा गया है कि मित्रतापूर्ण, निर्दोष और विचारपूर्वक बोलने वाला व्यक्ति प्रशंसा का पात्र बनता है।"

हमारे दैनिक जीवन में भाषा का अत्यंत महत्त्व है। वाणी के माध्यम से हम अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। साधना-संयुक्त निर्देशक द्वारा आत्म-कल्याणकारी भाषण एवं संवाद की दिशा दी जाती है, जिससे श्रोताओं को भी लाभ प्राप्त होता है। तीर्थंकर प्रभु ने भी अपनी वाणी द्वारा देशना दी थी।

आज तकनीकी युग में वक्ता की वाणी दूर-दूर तक सुनी जा सकती है। भाषा एक सशक्त माध्यम है जिसके द्वारा हम कल्याणकारी विचार प्रकट कर सकते हैं। परंतु यह भाषा मित, सीमित एवं संयमित होनी चाहिए। वाणी के दो दोष बताए गए हैं — बात को अनावश्यक रूप से लंबा करना और निष्प्रभावी/असार बात करना। वहीं वाणी के दो गुण हैं — परिमित और सारगर्भित बोलना।

'वचन रतन, मुख कोट है, होठ कपाट बणाय। समझ-समझ हरफ काढ़िए, मत परवश पड़ जाय।।'

वाणी बोलने से पूर्व थोड़ा विचार करें, तो वह वचन अधिक प्रभावशाली एवं लाभकारी सिद्ध हो सकता है। भगवान महावीर की वाणी आज हमें आगमों के रूप में प्राप्त है। आचार्य भिक्षु के साहित्य से उनकी दिव्य वाणी का साक्षात्कार किया जा सकता है।

आचार्यश्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की वाणी का भी अनेक जनों को अनुभव हुआ है। एक-एक प्रवचन जीवन में प्रेरणा देने वाला बन सकता है। हमारी वाणी निर्दोष होनी चाहिए। बिना कारण किसी पर दोषारोपण नहीं करना चाहिए।

कच्छ यात्रा के विभिन्न चरण

कच्छ यात्रा का उल्लेख करते हुए पूज्यवर ने कहा — "कच्छ से पहले सौराष्ट्र की यात्रा हुई। भुज में मर्यादा महोत्सव का आयोजन हुआ, जो गुजरात में आयोजित प्रथम मर्यादा महोत्सव था। एक बार मैं आचार्य महाप्रज्ञजी की वाणी को चरितार्थ करने आया था और दूसरी बार अपनी भावना से। अनेक संतों-आचार्यों से मिलना हुई। जहां पूज्य डालमुनि व्याख्यान देते थे, उस स्थान पर भी जाना हुआ और उनके विराजित पट्ट पर बैठना हुआ।"

आज कच्छ से विदाई का मंगल समारोह आयोजित हो रहा है। सौराष्ट्र की यात्रा पहली बार ही हुई है। मुनिश्री सुमेरमलजी 'सुदर्शन' की भावना थी कि कच्छ और सौराष्ट्र की यात्रा एक साथ हो। गुरुदेव तुलसी ने भी अहमदाबाद चातुर्मास से पूर्व इन दोनों क्षेत्रों में पदार्पण किया था, और मेरा भी इस बार वैसा ही कार्यक्रम बना।

आज अहमदाबाद से विशाल श्रावक समाज की उपस्थिति है। एक ओर कच्छ से विदाई और दूसरी ओर अहमदाबाद की ओर अग्रसर होना है। प्रेक्षा विश्व भारती में धर्म, अध्यात्म और जनकल्याण के कार्य अधिक विकसित होते रहें।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने कहा — "पूज्य डालगणी ने मुनि अवस्था में कच्छ के बेला क्षेत्र में चातुर्मास किया था। उनकी वाणी में ओज था, लोग चाव से उन्हें सुनते थे। वे सदैव आचार-विचार की प्रेरणा देते थे। गुरुदेव तुलसी ने भी कच्छ की यात्रा की थी। आचार्यवर ने अनेक सम्प्रदायों के साधु-साध्वियों से संवाद किया और सौहार्दपूर्ण वातावरण में धर्म प्रभावना की। पूज्यवर के पदार्पण से कच्छ में तेरापंथ की एक अमिट छवि बनी है।"

साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशा जी ने कहा — "व्यक्ति को समय का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए, अन्यथा पश्चाताप हो सकता है। जीवन की चार अवस्थाएँ — बाल्य, किशोर, युवा और वृद्धावस्था — में हमें चिंतन करना चाहिए कि कहीं हम प्रमाद में जीवन तो नहीं गंवा रहे हैं। जीवन क्षणभंगुर और अस्थायी है, इसका सदुपयोग करना चाहिए।"

मंगलभावना समारोह

मंगलभावना समारोह में अपनी पैतृक भूमि में नवदीक्षित मुनि कैवल्यकुमारजी, साध्वी गौरवयशाजी, साध्वी नवीनप्रभाजी, एवं समणी हिमप्रभाजी ने अपने हृदयोदगार व्यक्त किए। आदर्श संघवी व हीराभाई पटेल ने अपने विचार व्यक्त किए। कड़वी समाज के बच्चों ने अपनी प्रस्तुति दी। फतेहगढ़ की ओर से चंदू भाई संघवी, अरविंदभाई डोशी, नरेन्द्रभाई मेहता, मोहनभाई संघवी व महेश गांधी ने भी अपनी अभिव्यक्ति दी। साध्वी मंगलयशाजी द्वारा लिखित साध्वी मूलांजी की जीवनी 'कच्छ की पहली किरण' पुस्तक आचार्यश्री के समक्ष लोकार्पित की गई।

चतुर्मास व्यवस्था समिति-अहमदाबाद ने किया सेवा दायित्व ग्रहण

आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में ध्वज हस्तांतरण कार्यक्रम का आयोजन भी था। इस संदर्भ में कच्छ-भुज के लोग व अहमदाबाद से भी काफी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे। इस संदर्भ में भुज मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के अध्यक्ष कीर्तिभाई संघवी व चतुर्मास व्यवस्था समिति-अहमदाबाद के अध्यक्ष अरविंद संचेती ने अपनी-अपनी अभिव्यक्ति दी। इसके उपरान्त भुज व्यवस्था समिति के सदस्यों द्वारा अहमदाबाद चतुर्मास व्यवस्था समिति को ध्वज हस्तांतरित किया। आचार्यश्री ने इस संदर्भ में मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए मंगलपाठ सुनाया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

फतेहगढ़ में पूज्य डालगणी के मुनि अवस्था के चातुर्मासिक स्थल पर आचार्य प्रवर

भुज से अहमदाबाद को ध्वज हस्तांतरण के क्षण

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।